## अध्याय २

# श्री चैतन्य महाप्रभु के भावोन्माद की अभिव्यक्ति

इस अध्याय में लेखक ने महाप्रभु के जीवन के अन्तिम बारह वर्षों में सम्पन्न की गई लीलाओं का वर्णन किया है। इस तरह इसमें अन्त्यलीला की भी कुछ लीलाएँ वर्णित हुई हैं। ग्रन्थकार ने ऐसा क्यों किया यह समझ पाना सामान्य व्यक्ति के लिए अत्यन्त कठिन है। ग्रन्थकार आशा करते हैं कि महाप्रभु की लीलाएँ पढ़ने से मनुष्य को क्रमशः कृष्ण के प्रति सुप्त प्रेम जाग्रत करने में सहायता मिलेगी। वास्तव में यह *चैतन्य-चरितामृत* ग्रन्थकार ने अपनी वृद्धावस्था में लिखा था। इस आशंका से कि वे कहीं ग्रन्थ को पूरा न कर सकें, उन्होंने *अन्त्यलीला* का सारांश इस द्वितीय अध्याय में वर्णित किया है। श्रील कविराज गोस्वामी ने भक्ति के मामले में श्रील स्वरूप दामोदर के मत को प्रामाणिक माना है। इसके अतिरिक्त स्वरूप दामोदर द्वारा लिखित टिप्पिणियों से भी, जिन्हें रघुनाथ दास गोस्वामी ने कण्ठस्थ कर लिया था, *चैतन्य-चरितामृत* के लेखन में सहायता मिली। स्वरूप दामोदर गोस्वामी के तिरोधान के बाद रघुनाथ दास गोस्वामी वृन्दावन गये। उस समय ग्रंथकार श्रील कविराज गोस्वामी रघुनाथ दास गोस्वामी से मिले, जिनकी कृपा से उन्हें भी सारी लीलाएँ कण्ठस्थ हो गईं। इस तरह से ग्रंथकार इस दिव्य ग्रंथ *श्रीचैतन्य-चरितामृत* को पूरा कर सके।

বিচ্ছেদেঽস্মিন্প্রভোরন্ত্য-লীলা-সূত্রানুবর্ণনে ।
গৌরস্য কৃষ্ণ-বিচ্ছেদ-প্রলাপাদ্যনুবর্ণ্যতে ॥১॥

**विच्छेदेऽस्मिन्प्रभोरन्त्य-लीला-सूत्रानुवर्णने ।**
**गौरस्य कृष्ण-विच्छेद-प्रलापाद्यनुवर्ण्यते ॥ १ ॥**

**विच्छेदे**—अध्याय में; **अस्मिन्**—इस; **प्रभोः**—महाप्रभु के; **अन्त्य-लीला**—अन्त्य लीला; **सूत्र**—रूपरेखा के; **अनुवर्णने**—वर्णन में; **गौरस्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **कृष्ण-विच्छेद**—कृष्ण विरह का; **प्रलाप**—प्रलाप; **आदि**—अन्य विषय; **अनुवर्ण्यते**—वर्णन किये गये हैं।

**अनुवाद**

**श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं के अन्तिम विभाग को सारांश रूप में प्रस्तुत करते हुए इस अध्याय में मैं भगवान् के दिव्य भाव का वर्णन करूँगा, जो कृष्ण से उनके विरह के कारण उन्माद जैसा प्रतीत होता है।**

**तात्पर्य**

इस द्वितीय अध्याय में भगवान् चैतन्य द्वारा संन्यास ग्रहण करने के बाद की लीलाओं का वर्णन हुआ है। इसमें श्री चैतन्य महाप्रभु को विशेष रूप से गौर के नाम से सम्बोधित किये गये हैं, जिसका अर्थ है गोरे वर्ण का व्यक्ति। कृष्ण सामान्यतया अपने श्याम रंग के कारण प्रसिद्ध हैं, किन्तु जब वे गोपियों के विचार में मग्न होते हैं, तो कृष्ण भी गोरे हो जाते हैं, क्योंकि सारी गोपियाँ गौर वर्ण की हैं। चैतन्य महाप्रभु विशेष रूप से उसी तरह कृष्ण का विरह अनुभव करते थे, जिस प्रकार प्रेमीका अपने प्रेमी से बिछुड़कर निराश हो जाती है। वे सब भाव, जो श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा उनकी अन्तिम बारह वर्षों की लीलाओं में व्यक्त हुए, उनका संक्षिप्त वर्णन *मध्यलीला* के इस द्वितीय अध्याय में किया गया है।

জয় জয় শ্রী-চৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।
জয়াদ্বৈতচন্দ্র জয় গৌর-ভক্ত-বৃন্দ ॥২॥

**जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।**
**जयाद्वैतचन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २ ॥**

**जय जय श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो; **जय नित्यानन्द**—भगवान् नित्यानन्द की जय हो; **जय अद्वैतचन्द्र**—अद्वैत प्रभु की जय हो; **जय गौर-भक्त-वृन्द**—भगवान् के सभी भक्तों की जय हो।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! अद्वैतचन्द्र की जय हो और महाप्रभु के सारे भक्तों की जय हो!**

শেষ যে রহিল প্রভুর দ্বাদশ বৎসর ।
কৃষ্ণের বিয়োগ-স্ফূর্তি হয় নিরন্তর ॥৩॥

**शेष ये रहिल प्रभुर द्वादश वत्सर ।**
**कृष्णेर वियोग-स्फूर्ति हय निरन्तर ॥ ३ ॥**

**शेष**—अन्त में; **ये**—वे; **रहिल**—रहे; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **द्वादश वत्सर**—बारह वर्ष; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण के; **वियोग**—वियोग के; **स्फूर्ति**—प्रकट; **हय**—है; **निरन्तर**—निरन्तर।

अनुवाद

**अन्तिम बारह वर्षों में श्री चैतन्य महाप्रभु ने अविरत कृष्ण के विरह भाव के सारे लक्षण प्रकट किये।**

শ্রী-রাধিকার চেষ্টা যেন উদ্ধব-দর্শনে ।
এই-মত দশা প্রভুর হয় রাত্রি-দিনে ॥৪॥

**श्री-राधिकार चेष्टा येन उद्धव-दर्शने ।**
**एइ-मत दशा प्रभुर हय रात्रि-दिने ॥ ४ ॥**

**श्री-राधिकार**—श्रीमती राधारानी की; **चेष्टा**—गतिविधियाँ; **येन**—की तरह; **उद्धव-दर्शने**—वृन्दावन में उद्धव से मिलने में; **एइ-मत**—इस प्रकार; **दशा**—दशा; **प्रभुर**—महाप्रभु की; **हय**—है; **रात्रि-दिने**—दिन-रात।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु की मानसिक दशा दिन-रात वैसी ही रहती थी, जैसी कि राधारानी की थी, जब उद्धव गोपियों से मिलने वृन्दावन आये थे।**

নিরন্তর হয় প্রভুর বিরহ-উন্মাদ ।
ভ্রম-ময় চেষ্টা সদা, প্রলাপ-ময় বাদ ॥৫॥

**निरन्तर हय प्रभुर विरह-उन्माद ।**
**भ्रम-मय चेष्टा सदा, प्रलाप-मय वाद ॥५॥**

**निरन्तर**—निरन्तर; **हय**—है; **प्रभुर**—महाप्रभु के; **विरह**—विरह के; **उन्माद**—उन्माद; **भ्रम-मय**—विस्मृति; **चेष्टा**—चेष्टाएँ, गतिविधियाँ; **सदा**—सदा; **प्रलाप-मय**—प्रलापपूर्ण; **वाद**—बातें।

अनुवाद

**महाप्रभु लगातार विरहजनित उन्माद के भाव में रहते थे। उनके सारे कार्यकलाप विस्मृति तथा उनकी बातचीत सदैव प्रलाप पर आधारित रहती थी।**

রোম-কূপে রক্তোদগম, দন্ত সব হালে ।
ক্ষণে অঙ্গ ক্ষীণ হয়, ক্ষণে অঙ্গ ফুলে ॥৬॥

**रोम-कूपे रक्तोद्गम, दन्त सब हाले ।**
**क्षणे अङ्ग क्षीण हय, क्षणे अङ्ग फुले ॥६॥**

**रोम-कूपे**—शरीर के छेद (रोंगटे); **रक्त-उद्गम**—रक्त का बहना; **दन्त**—दाँत; **सब**—सब; **हाले**—ढीले हो जाते; **क्षणे**—एक क्षण में; **अङ्ग**—सारा शरीर; **क्षीण**—दुबला, क्षीण; **हय**—हो जाता; **क्षणे**—दूसरे क्षण; **अङ्ग**—शरीर; **फुले**—फूल जाता।

अनुवाद

**उनके शरीर के समस्त रोमछिद्रों से रक्त बहता था और उनके सारे दाँत हिलने लगते थे। किसी क्षण उनका सारा शरीर दुबला हो जाता और दूसरे ही क्षण मोटा हो जाता।**

গম্ভীরা-ভিতরে রাত্রে নাহি নিদ্রা-লব ।
ভিত্তে মুখ-শির ঘষে, ক্ষত হয় সব ॥৭॥

**गम्भीरा-भितरे रात्रे नाहि निद्रा-लव ।**
**भित्ते मुख-शिर घषे, क्षत हय सब ॥७॥**

**गम्भीरा-भितरे**—अन्दर के कमरे के भीतर; **रात्रे**—रात को; **नाहि**—नहीं; **निद्रा-लव**—तनिक भी नींद; **भित्ते**—दीवार पर; **मुख**—मुख; **शिर**—सिर; **घषे**—घिसना, रगड़ना; **क्षत**—क्षति, चोट; **हय**—हैं; **सब**—सब।

अनुवाद

**दालान के आगे का छोटा कमरा गम्भीरा कहलाता है। श्री चैतन्य महाप्रभु उसी कमरे में रहते थे, किन्तु वे एक क्षण-भर भी सोते नहीं थे। वे रात-भर अपना मुँह और सिर दीवार पर रगड़ते रहते थे और उनके सारे मुखमण्डल में घाव हो गये थे।**

তিন দ্বারে কপাট, প্রভু যায়েন বাহিরে ।
কভু সিংহ-দ্বারে পড়ে, কভু সিন্ধু-নীরে ॥৮॥

**तिन द्वारे कपाट, प्रभु ग्रायेन बाहिरे ।**
**कभु सिंह-द्वारे पड़े, कभु सिन्धु-नीरे ॥ ८ ॥**

**तिन द्वारे**—तीन द्वार; **कपाट**—पूर्णतया बन्द; **प्रभु**—महाप्रभु; **ग्रायेन**—जाते; **बाहिरे**—बाहर; **कभु**—कभी; **सिंह-द्वारे**—जगन्नाथ मन्दिर के सिंहद्वार नामक द्वार पर; **पड़े**—सीधा गिरते; **कभु**—कभी; **सिन्धु-नीरे**—समुद्र जल में।

अनुवाद

**यद्यपि घर के तीनों दरवाजे सदैव बन्द रहते थे, किन्तु फिर भी महाप्रभु बाहर चले जाते थे। कभी वे जगन्नाथ मन्दिर के सिंहद्वार पर पाये जाते थे और कभी वे समुद्र में गिर पड़ते थे।**

চটক পর্বত দেখি' 'গোবর্ধন' ভ্রমে ।
ধাঞা চলে আর্ত-নাদ করিয়া ক্রন্দনে ॥৯॥

**चटक पर्वत देखि' 'गोवर्धन' भ्रमे ।**
**धाञा चले आर्त-नाद करिया क्रन्दने ॥ ९ ॥**

**चटक पर्वत**—रेत के टीले; **देखि'**—देखकर; **गोवर्धन**—वृन्दावन का गोवर्धन पर्वत; **भ्रमे**—भ्रम में; **धाञा**—दौड़ते हुए; **चले**—जाते; **आर्त-नाद**—आर्तनाद; **करिया**—करके; **क्रन्दने**—रोना।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु बालू के टीलों को गोवर्धन पर्वत समझकर तेजी से दौड़ते। दौड़ते समय महाप्रभु उच्च स्वर में विलाप तथा क्रन्दन करते।**

### तात्पर्य

समुद्र की हवाओं से कभी-कभी बालू के टीले बन जाते हैं। ऐसे टीले *चटक पर्वत* कहलाते हैं। इन टीलों को देखकर, बालू के ढेर मात्र समझने के स्थान पर महाप्रभु को गोवर्धन पर्वत का भ्रम होता था। अतएव कभी-कभी वे इन टीलों की ओर तेजी से दौड़ते और उच्चस्वर से क्रन्दन करते, जिससे राधारानी जैसे मनोभाव व्यक्त होते। इस तरह चैतन्य महाप्रभु कृष्ण तथा उनकी लीलाओं के विचार में मग्न रहते थे। उनकी इस मनोदशा के कारण वृन्दावन तथा गोवर्धन पर्वत का वातावरण बन जाता और इस तरह वे विरह तथा मिलन के दिव्य आनन्द का आस्वादन करते।

উপবনোদ্যান দেখি' বৃন্দাবন-জ্ঞান ।
তাহাঁ যাই' নাচে, গায়, ক্ষণে মূর্চ্ছা যা'ন ॥১০॥

**उपवनोद्यान देखि' वृन्दावन-ज्ञान ।**
**ताहाँ ग्राइ' नाचे, गाय, क्षणे मूर्च्छा ग्रा'न ॥ १० ॥**

**उपवन-उद्यान**—छोटे उद्यान; **देखि'**—देखकर; **वृन्दावन-ज्ञान**—वृन्दावन के वनों का भान होता; **ताहाँ**—वहाँ; **ग्राइ'**—जाकर; **नाचे**—नाचते; **गाय**—गाते; **क्षणे**—क्षण में; **मूर्च्छा**—मूर्छा; **ग्रा'न**—आ जाती।

### अनुवाद

**कभी-कभी श्री चैतन्य महाप्रभु को नगर के छोटे छोटे उद्यानों से वृन्दावन का भ्रम हो जाता। कभी वे वहाँ जाते, नाचते और कीर्तन करते और कभी-कभी आध्यात्मिक भावावेश में अचेत हो जाते।**

কাহাঁ নাহি শুনি যেই ভাবের বিকার ।
সেই ভাব হয় প্রভুর শরীরে প্রচার ॥১১॥

**काहाँ नाहि शुनि ग्रेइ भावेर विकार ।**
**सेइ भाव हय प्रभुर शरीरे प्रचार ॥ ११ ॥**

**काहाँ**—कहीं भी; **नाहि**—नहीं; **शुनि**—हमने सुना; **ग्रेइ**—ऐसा; **भावेर**—भावावेश का; **विकार**—विकार; **सेइ**—वह; **भाव**—भावावेश; **हय**—है; **प्रभुर**—महाप्रभु के; **शरीरे**—शरीर में; **प्रचार**—प्रकट।

अनुवाद

**दिव्य भावों के कारण महाप्रभु के शरीर में जो अद्वितीय विकार प्रकट होते, वे उनके अतिरिक्त किसी अन्य के शरीर में सम्भव नहीं है।**

तात्पर्य

*भक्तिरसामृत-सिन्धु* जैसे उच्च कोटि के ग्रंथ में शरीर के जिन भावमय-विकारों का वर्णन हुआ है, वे इस भौतिक जगत् में सामान्यत: नहीं देखे जाते। किन्तु ये लक्षण श्री चैतन्य महाप्रभु के शरीर में पूर्णतया विद्यमान थे। ये लक्षण *महाभाव* के सूचक हैं। कभी-कभी सहजिया लोग कृत्रिम रूप से इन लक्षणों की नकल उतारते हैं, किन्तु अनुभवी भक्त उनको तुरन्त तिरस्कृत कर देते हैं। यहाँ इस ग्रंथ का प्रणेता यह स्वीकार करते हैं कि ये लक्षण एक श्री चैतन्य महाप्रभु के शरीर के अतिरिक्त अन्य कहीं भी नहीं पाये जा सकते।

হস্ত-পদের সন্ধি সব বিতস্তি-প্রমাণে ।
সন্ধি ছাড়ি' ভিন্ন হয়ে, চর্ম রহে স্থানে ॥ ১২॥

**हस्त-पदेर सन्धि सब वितस्ति-प्रमाणे ।**
**सन्धि छाड़ि' भिन्न हये, चर्म रहे स्थाने ॥ १२॥**

**हस्त-पदेर**—हाथों और पैरों के; **सन्धि**—जोड़; **सब**—सब; **वितस्ति**—लगभग आठ इंच; **प्रमाणे**—लम्बाई में; **सन्धि**—जोड़; **छाड़ि'**—अलग हो जाना; **भिन्न**—अलग; **हये**—हो जाते; **चर्म**—चमड़ी; **रहे**—रहती; **स्थाने**—अपनी जगह पर।

अनुवाद

**कभी-कभी उनके हाथों तथा पैरों के जोड़ आठ इंच ( एक बित्ता ) तक अलग हो जाते थे और ऊपर से केवल चमड़ी से जुड़े रहते थे।**

হস্ত, পদ, শির সব শরীর-ভিতরে ।
প্রবিষ্ট হয়—কূর্ম-রূপ দেখিয়ে প্রভুরে ॥ ১৩॥

**हस्त, पद, शिर सब शरीर-भितरे ।**
**प्रविष्ट हय—कूर्म-रूप देखिये प्रभुरे ॥ १३॥**

**हस्त**—हाथ; **पद**—पाँव; **शिर**—सिर; **सब**—सब; **शरीर**—शरीर; **भितरे**—भीतर;

**प्रविष्ट**—प्रविष्ट; **हय**—हो जाते; **कूर्म-रूप**—कछुए की तरह; **देखिये**—दिखते; **प्रभुरे**—महाप्रभु।

अनुवाद

**कभी-कभी श्री चैतन्य महाप्रभु के हाथ, पैर तथा सिर उनके शरीर के भीतर उसी तरह समा जाते, जिस प्रकार कछुआ अपने अंगों को भीतर समेट लेता है।**

এই মত অদ্ভুত-ভাব শরীরে প্রকাশ ।
মনেতে শূন্যতা, বাক্যে হা-হা-হুতাশ ॥১৪॥

**एइ मत अद्भुत-भाव शरीरे प्रकाश ।**
**मनेते शून्यता, वाक्ये हा-हा-हुताश ॥ १४॥**

**एइ मत**—इस प्रकार; **अद्भुत**—अद्भुत; **भाव**—भावावेश; **शरीरे**—शरीर में; **प्रकाश**—प्रकट; **मनेते**—मन में; **शून्यता**—शून्यता, रिक्तता; **वाक्ये**—बोलने में; **हा-हा**—मायूसी; **हुताश**—हताशा।

अनुवाद

**इस प्रकार श्री चैतन्य महाप्रभु अद्भुत भावपूर्ण लक्षण ( भाव ) प्रकट करते थे। उनका मन शून्य प्रतीत होता और उनके शब्दों में निराशा तथा हताशा प्रकट होती।**

काहाँ মোর প্রাণ-নাথ মুরলী-বদন ।
কাহাঁ করোঁ কাহাঁ পাঁ ব্রজেন্দ্র-নন্দন ॥১৫॥

**काहाँ मोर प्राण-नाथ मुरली-वदन ।**
**काहाँ करों काहाँ पाँ व्रजेन्द्र-नन्दन ॥ १५॥**

**काहाँ**—कहाँ; **मोर**—मेरे; **प्राण-नाथ**—प्राणनाथ; **मुरली-वदन**—मुरली बजाने वाले; **काहाँ**—क्या; **करों**—मैं करुँ; **काहाँ**—कहाँ; **पाँ**—मैं पाऊँ; **व्रजेन्द्र-नन्दन**—महाराज नन्द का पुत्र।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु अपने मन के भाव इस प्रकार प्रकट करते,**

**"मुरलीवादन करने वाले मेरे प्राणनाथ कहाँ हैं? अब मैं क्या करूँ? मैं महाराज नन्द के बेटे को ढूँढने कहाँ जाऊँ?**

কাহারে কহিব, কেবা জানে মোর দুঃখ ।
ব্রজেন্দ্র-নন্দন বিনু ফাটে মোর বুক ॥১৬॥

**काहारे कहिब, केबा जाने मोर दुःख ।**
**व्रजेन्द्र-नन्दन विनु फाटे मोर बुक ॥ १६ ॥**

**काहारे**—किस को; **कहिब**—मैं कहूँ; **केबा**—कौन; **जाने**—जानता है; **मोर**—मेरा; **दुःख**—दुःख; **व्रजेन्द्र-नन्दन**—कृष्ण, नन्द महाराज का पुत्र; **विनु**—बिना; **फाटे**—फट जाता है; **मोर**—मेरा; **बुक**—हृदय।

अनुवाद

**"मैं किससे कहूँ? मेरे दुःख को कौन समझ सकेगा? नन्द महाराज के पुत्र के बिना मेरा हृदय फटा जा रहा है।"**

এই-মত বিলাপ করে বিহ্বল অন্তর ।
রায়ের নাটক-শ্লোক পড়ে নিরন্তর ॥১৭॥

**एइ-मत विलाप करे विह्वल अन्तर ।**
**रायेर नाटक-श्लोक पड़े निरन्तर ॥ १७ ॥**

**एइ-मत**—इस प्रकार; **विलाप**—विलाप; **करे**—करते; **विह्वल**—विह्वल होकर; **अन्तर**—अन्दर से; **रायेर**—श्री रामानन्द राय के; **नाटक**—नाटक; **श्लोक**—श्लोक; **पड़े**—पढ़ते; **निरन्तर**—निरन्तर।

अनुवाद

**इस प्रकार श्री चैतन्य महाप्रभु कृष्ण के विरह में सदैव अपनी विह्वलता प्रकट करते और विलाप करते। ऐसे अवसरों पर वे रामानन्द राय के नाटक, *जगन्नाथ-वल्लभ-नाटक* से श्लोक का उच्चारण करते।**

প্রেম-চ্ছেদ-রুজোঽবগচ্ছতি হরির্নায়ং ন চ প্রেম বা
স্থানাস্থানমবৈতি নাপি মদনো জানাতি নো দুর্বলাঃ ।

অন্যো বেদ ন চান্য-দুঃখমখিলং নো জীবনং বাশ্রবং
দ্বি-ত্রাণ্যেব দিনানি যৌবনমিদং হা-হা বিধে কা গতিঃ ॥১৮॥

**प्रेम-च्छेद-रुजोऽवगच्छति हरिर्नायं न च प्रेम वा**
**स्थानास्थानमवैति नापि मदनो जानाति नो दुर्बलाः ।**
**अन्यो वेद न चान्य-दुःखमखिलं नो जीवनं वाश्रवं**
**द्वि-त्राण्येव दिनानि यौवनमिदं हा-हा विधे का गतिः ॥ १८ ॥**

**प्रेम-छेद-रुजः**—प्रेम-सम्बन्ध टूटने पर दुःख; **अवगच्छति**—जानता है; **हरिः**—हरि, परम भगवान्; **न**—नहीं; **अयम्**—यह; **न च**—नहीं; **प्रेम**—प्रेम; **वा**—नहीं; **स्थान**—उचित स्थान; **अस्थानम्**—अनुचित स्थान; **अवैति**—जानता है; **न**—न; **अपि**—ही; **मदनः**—कामदेव; **जानाति**—जानता है; **नः**—हमारी; **दुर्बलाः**—दुर्बल; **अन्यः**—कोई दूसरा; **वेद**—जानता है; **न**—न; **च**—ही; **अन्य-दुःखम्**—दूसरों की कठिनाइयों को; **अखिलम्**—सभी; **नः**—हमारे; **जीवनम्**—जीवन; **वा**—अथवा; **आश्रवम्**—मात्र दुःखों से पूर्ण; **द्वि**—दो; **त्राणि**—तीन; **एव**—ही; **दिनानि**—दिन; **यौवनम्**—यौवन; **इदम्**—यह; **हा-हा**—हाय; **विधे**—हे विधाता; **का**—क्या; **गतिः**—हमारी गति।

### अनुवाद

**[ श्रीमती राधारानी विलाप किया करती थीं : ] "हमारा कृष्ण इस पर कोई ध्यान नहीं देता कि हमने प्रेम-सम्बन्ध में न जाने कितनी चोटें सही हैं। वास्तव में प्रेम में हमारा दुरुपयोग किया गया है, क्योंकि प्रेम यह नहीं जानता कि कहाँ प्रहार किया जाय और कहाँ नहीं। यहाँ तक कि कामदेव भी हमारी असहाय अवस्था से परिचित नहीं है। मैं किसी से क्या कहूँ? कोई दूसरे की कठिनाइयों को नहीं समझ सकता। हमारा जीवन वास्तव में हमारे वश में नहीं रहा, क्योंकि यौवन तो दो-तीन दिन रहेगा और शीघ्र ही समाप्त हो जायेगा। ऐसी अवस्था में हे विधाता, हमारी गति क्या होगी?"'**

### तात्पर्य

यह श्लोक श्री रामानन्द राय कृत *जगन्नाथ-वल्लभ नाटक* (३.९) से है।

উপজিল প্রেমাঙ্কুর, ভাঙ্গিল যে দুঃখ-পূর,
কৃষ্ণ তাহা নাহি করে পান ।

বাহিরে নাগর-রাজ, ভিতরে শঠের কাজ,
পর-নারী বধে সাবধান ॥ ১৯॥

**उपजिल प्रेमाङ्कुर, भाङ्गिल ग्रे दुःख-पूर,**
**कृष्ण ताहा नाहि करे पान ।**
**बाहिरे नागर-राज, भितरे शठेर काज,**
**पर-नारी वधे सावधान ॥ १९॥**

**उपजिल**—बढ़ गया; **प्रेम-अङ्कुर**—भगवत् प्रेम का अंकुर; **भाङ्गिल**—टूट गया; **ग्रे**—वहाँ; **दुःख-पूर**—दुःख पूर्ण; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **ताहा**—वह; **नाहि**—नहीं; **करे**—करते; **पान**—पान; **बाहिरे**—बाहर से; **नागर-राज**—सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति; **भितरे**—अन्दर से; **शठेर**—धोखेबाज का; **काज**—कार्य; **पर-नारी**—पर नारियाँ; **वधे**—मारते हैं; **सावधान**—अत्यन्त सावधान।

अनुवाद

**[ कृष्ण के विरह में दुःखी श्रीमती राधारानी ने इस प्रकार कहा : ] "ओह! मैं अपने दुःख के बारे में क्या कहूँ? कृष्ण से मिलने के बाद ही मेरे प्रेम का अंकुर फूटा, किन्तु उनसे विलग होने पर मुझे इतना बड़ा धक्का लगा कि वह व्याधि की तरह जाने का नाम नहीं ले रहा। इस व्याधि के एकमात्र वैद्य स्वयं कृष्ण हैं, किन्तु वे भक्ति के इस अंकुरित पौधे की कोई चिन्ता नहीं कर रहे। मैं कृष्ण के व्यवहार के बारे में क्या कहूँ? बाहर से वे एक आकर्षण तरुण प्रेमी हैं, किन्तु भीतर से महा ठग हैं और दूसरों की पत्नियों को मारने में अत्यन्त निपुण हैं।"**

সখি হে, না বুঝিয়ে বিধির বিধান
সুখ লাগি' কৈলুঁ প্রীত, হৈল দুঃখ বিপরীত, ।
এবে যায়, না রহে পরাণ ॥ ২০॥

**सखि हे, ना बुझिये विधिर विधान**
**सुख लागि' कैलुँ प्रीत, हैल दुःख विपरीत, ।**
**एबे ग्राय, ना रहे पराण ॥ २०॥**

**सखि हे**—(मेरी प्रिय) सखी; **ना बुझिये**—मैं नहीं समझ सकती; **विधिर**—विधाता का; **विधान**—विधान; **सुख लागि'**—सुख के लिए; **कैलुँ**—मैंने किया; **प्रीत**—प्रेम; **हैल**—यह

हो गया; **दुःख**—दुःख; **विपरीत**—विपरीत; **एबे**—अब; **ग्राय**—जा रहा है; **ना**—नहीं; **रहे**—रहता; **पराण**—जीवन।

अनुवाद

**[ कृष्ण से प्रेम करने के परिणामों के विषय में श्रीमती राधारानी ने आगे कहा : ] "हे सखी, मैं विधाता के विधान को नहीं समझ पा रही। मैंने तो सुख के लिए कृष्ण से प्रेम किया था, किन्तु परिणाम बिल्कुल विपरीत निकला। अब मैं दुःख के सागर में डूब रही हूँ। हो सकता है कि मैं अब मरने वाली हूँ, क्योंकि मेरी जीवनी-शक्ति चुक गई है। ऐसी है मेरी मानसिक दशा।**

কুটিল প্রেমা অগেয়ান, নাহি জানে স্থানাস্থান,
ভাল-মন্দ নারে বিচারিতে ।
ক্রূর শঠের গুণ-ডোরে, হাতে-গলে বান্ধি' মোরে,
রাখিয়াছে, নারি' উকাশিতে ॥২১॥

**कुटिल प्रेमा अगेयान, नाहि जाने स्थानास्थान,**
**भाल-मन्द नारे विचारिते ।**
**क्रूर शठेर गुण-डोरे, हाते-गले बान्धि' मोरे,**
**राखियाछे, नारि' उकाशिते ॥ २१ ॥**

**कुटिल**—कुटिल; **प्रेमा**—कृष्ण-प्रेम; **अगेयान**—अज्ञानी; **नाहि**—नहीं; **जाने**—जानती; **स्थान-अस्थान**—उचित अथवा अनुचित स्थान; **भाल-मन्द**—अच्छा अथवा बुरा; **नारे**—असमर्थ; **विचारिते**—विचार करना; **क्रूर**—बहुत क्रूर; **शठेर**—धोखेबाज; **गुण-डोरे**—सद्गुणों की डोरी से; **हाते**—हाथों पर; **गले**—गले में; **बान्धि'**—बाँधकर; **मोरे**—मुझे; **राखियाछे**—रखा है; **नारि'**—अक्षम होने के कारण; **उकाशिते**—राहत पाने के।

अनुवाद

**"प्रेम-व्यापार प्रकृति से कुटिल होते हैं। उनमें पर्याप्त ज्ञान से प्रवेश नहीं किया जाता, न ही वे इसका विचार करते हैं कि कोई स्थान उपयुक्त है या नहीं। न ही वे परिणामों की चिन्ता करते हैं। क्रूर कृष्ण ने अपने सद्गुणों की डोरी से मेरा गला तथा मेरे हाथ बाँध दिये हैं और अब मैं सुख पाने में असमर्थ हूँ।**

যে মদন তনু-হীন, পর-দ্রোহে পরবীণ,
পাঁচ বাণ সন্ধে অনুক্ষণ ।
অবলার শরীরে, বিন্ধি' কৈল জরজরে,
দুঃখ দেয়, না লয় জীবন ॥২২॥

**ये मदन तनु-हीन, पर-द्रोहे परवीण,**
**पाँच बाण सन्धे अनुक्षण ।**
**अबलार शरीरे, विन्धि' कैल जरजरे,**
**दुःख देय, ना लय जीवन ॥ २२ ॥**

**ये मदन**—वह कामदेव; **तनु-हीन**—शरीर से विहीन; **पर-द्रोहे**—दूसरों को कठिनाई में डालने में; **परवीण**—बहुत प्रवीण; **पाँच**—पाँच; **बाण**—बाण; **सन्धे**—साधता है; **अनुक्षण**—निरन्तर; **अबलार**—अबला नारी के; **शरीरे**—शरीर में; **विन्धि'**—भेदकर ; **कैल**—किया; **जरजरे**—लगभग अक्षम; **दुःख देय**—दुःख देता है; **ना**—नहीं; **लय**—लेता; **जीवन**—जीवन।

**अनुवाद**

**"मेरे प्रेम-सम्बन्ध में मदन नाम का एक व्यक्ति है। उसके गुण इस प्रकार हैं—उसका कोई स्थूल शरीर नहीं है, किन्तु वह अन्यों को पीड़ा देने में बहुत ही प्रवीण है। उसके पास पाँच बाण हैं, जिन्हें वह अपने धनुष पर चढ़ाकर निर्दोष स्त्रियों के शरीर में सन्धान करता है। इस प्रकार ये स्त्रियाँ जर्जर हो जाती हैं। अच्छा तो यह होता कि वह बिना हिचक के मेरे प्राण ले लेता, किन्तु वह ऐसा नहीं करता। वह मुझे केवल पीड़ा देता है।**

অন্যের যে দুঃখ মনে, অন্যে তাহা নাহি জানে,
সত্য এই শাস্ত্রের বিচারে ।
অন্য জন কাহাঁ লিখি, না জানয়ে প্রাণ-সখী,
যাতে কহে ধৈর্য ধরিবারে ॥২৩॥

**अन्येर ये दुःख मने, अन्ये ताहा नाहि जाने,**
**सत्य एइ शास्त्रेर विचारे ।**
**अन्य जन काहाँ लिखि, ना जानये प्राण-सखी,**
**याते कहे धैर्य धरिबारे ॥ २३ ॥**

**अन्येर**—दूसरों का; **ग्रे**—वह; **दुःख**—दुःख; **मने**—मन में; **अन्ये**—अन्य; **ताहा**—वह; **नाहि**—नहीं; **जाने**—जानता; **सत्य**—सत्य; **एइ**—यह; **शास्त्रेर**—शास्त्र के; **विचारे**—विचार में; **अन्य जन**—अन्य व्यक्ति; **काहाँ**—क्या; **लिखि**—मैं लिखूँ; **ना जानये**—नहीं जानता; **प्राण-सखी**—मेरी प्राण सखियों; **ग्राते**—जिससे; **कहे**—कहते हैं; **धैर्य धरिबारे**—धैर्य रखो।

अनुवाद

**"शास्त्रों में कहा गया है कि एक मनुष्य दूसरे के मन के दुःख को नहीं जान सकता। अतएव मैं ललिता तथा अपनी अन्य प्रिय सखियों के बारे में क्या कह सकती हूँ? न ही वे मेरे अन्तर के दुःख को समझ सकती हैं। वे बारम्बार यही कहकर मुझे सान्त्वना देती हैं 'हे सखी, धैर्य धरो।'**

'কৃষ্ণ——কৃপা-পারাবার, কভু করিবেন অঙ্গীকার'
সখি, তোর এ ব্যর্থ বচন ।
জীবের জীবন চঞ্চল, যেন পদ্ম-পত্রের জল,
তত দিন জীবে কোন্‌জন ॥২৪॥

**'कृष्ण——कृपा-पारावार, कभु करिबेन अङ्गीकार'**
**सखि, तोर ए व्यर्थ वचन ।**
**जीवेर जीवन चञ्चल, ग्रेन पद्म-पत्रेर जल,**
**तत दिन जीवे कोन्‌जन ॥ २४॥**

**कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **कृपा-पारावार**—कृपा सिंधु; **कभु**—कभी; **करिबेन**—करेंगे; **अङ्गीकार**—स्वीकार; **सखि**—मेरी प्रिय सखी; **तोर**—तुम्हारा; **ए**—यह; **व्यर्थ**—व्यर्थ; **वचन**—वचन; **जीवेर**—जीव के; **जीवन**—जीवन; **चञ्चल**—चंचल; **ग्रेन**—की तरह; **पद्म-पत्रेर**—कमल पत्र के; **जल**—जल; **तत**—इतने अधिक; **दिन**—दिन; **जीवे**—जीये; **कोन्**—कौन; **जन**—व्यक्ति।

अनुवाद

**"मैं कहती हूँ, 'हे सखियों, तुम मुझे यह कहकर धैर्य धरने को कहती हो कि कृष्ण कृपासिन्धु हैं और एक न एक दिन मुझे स्वीकार कर लेंगे। किन्तु मैं बतला दूँ कि मुझे इससे सान्त्वना नहीं मिल सकेगी। जीव का जीवन क्षणभंगुर है। यह कमल की पंखुड़ी पर टिके जल के समान है। कृष्ण-कृपा की आशा में भला इतने दिन कौन जीवित रहेगा?**

শত বৎসর পর্যন্ত, জীবের জীবন অন্ত,
এই বাক্য কহ না বিচারি' ।
নারীর যৌবন-ধন, যারে কৃষ্ণ করে মন,
সে যৌবন-দিন দুই-চারি ॥২৫॥

**शत वत्सर पर्य्यन्त, जीवेर जीवन अन्त,**
**एइ वाक्य कह ना विचारि' ।**
**नारीर य़ौवन-धन, य़ारे कृष्ण करे मन,**
**से य़ौवन-दिन दुइ-चारि ॥ २५ ॥**

**शत वत्सर पर्य्यन्त**—एक सौ वर्ष तक; **जीवेर**—जीव के; **जीवन**—जीवन के; **अन्त**—अन्त; **एइ वाक्य**—यह शब्द; **कह**—तुम कहते हो; **ना**—बिना; **विचारि'**—विचारकर; **नारीर**—नारी का; **य़ौवन-धन**—यौवन धन; **य़ारे**—जिसमें; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **करे**—करते हैं; **मन**—रुचि; **से य़ौवन**—वह यौवन; **दिन**—दिन; **दुइ-चारि**—दो चार।

**अनुवाद**

**"'मनुष्य सौ वर्ष से अधिक जीवित नहीं रहता। तुम्हें यह भी विचार करना होगा कि स्त्री का यौवन, जो कृष्ण का एकमात्र आकर्षण है, कुछ ही दिनों तक रहता है।**

অগ্নি যৈছে নিজ-ধাম, দেখাইয়া অভিরাম,
পতঙ্গীরে আকর্ষিয়া মারে ।
কৃষ্ণ ঐছে নিজ-গুণ, দেখাইয়া হরে মন,
পাছে দুঃখ-সমুদ্রেতে ডারে ॥২৬॥

**अग्नि य़ैछे निज-धाम, देखाइया अभिराम,**
**पतङ्गीरे आकर्षिया मारे ।**
**कृष्ण ऐछे निज-गुण, देखाइया हरे मन,**
**पाछे दुःख-समुद्रेते डारे ॥ २६ ॥**

**अग्नि**—अग्नि; **य़ैछे**—जैसे; **निज-धाम**—अपने घर; **देखाइया**—दिखाकर; **अभिराम**—आकर्षक; **पतङ्गीरे**—पतंगे; **आकर्षिया**—आकर्षित होकर; **मारे**—मारती है; **कृष्ण**—भगवान् श्रीकृष्ण; **ऐछे**—इस प्रकार; **निज-गुण**—उनके दिव्य गुण; **देखाइया**—दिखाकर; **हरे मन**—हमारे मन को आकर्षित करते हैं; **पाछे**—अन्त में; **दुःख-समुद्रेते**—दुःख के सागर में; **डारे**—डुबो देते हैं।

अनुवाद

**"'यदि तुम यह कहती हो कि कृष्ण दिव्य गुणों के सागर हैं, अतएव कभी न कभी दयालु होंगे, तो मुझे इतना ही कहना है कि वे उस अग्नि के समान हैं, जो अपनी चकाचौंध से पतंगों को आकृष्ट करती है और उन्हें मार डालती है। कृष्ण के गुण ऐसे हैं। वे अपने दिव्य गुण दिखलाकर वे हमारे मनों को आकृष्ट करते हैं और बाद में हमसे विलग होकर हमें दु:ख के सागर में डुबा देते हैं।'"**

এতেক বিলাপ করি', বিষাদে শ্রী-গৌরহরি,
উঘাড়িয়া দুঃখের কপাট ।
ভাবের তরঙ্গ-বলে, নানা-রূপে মন চলে,
আর এক শ্লোক কৈল পাঠ ॥২৭॥

**एतेक विलाप करि', विषादे श्री-गौरहरि,**
**उघाड़िया दु:खेर कपाट ।**
**भावेर तरङ्ग-बले, नाना-रूपे मन चले,**
**आर एक श्लोक कैल पाठ ॥ २७॥**

**एतेक**—इस तरह; **विलाप**—विलाप; **करि'**—करके; **विषादे**—शोक में; **श्री-गौरहरि**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **उघाड़िया**—खोलकर; **दु:खेर**—दु:ख का; **कपाट**—द्वार; **भावेर**—भावावेश का; **तरङ्ग-बले**—तरंगों के बल पर; **नाना-रूपे**—नाना रूप में; **मन**—उनका मन; **चले**—घूमता है; **आर एक**—एक और; **श्लोक**—श्लोक का; **कैल**—किया; **पाठ**—पाठ।

अनुवाद

**इस प्रकार श्री चैतन्य महाप्रभु विषाद के महासागर में विलाप करते और अपने दु:ख के द्वारों को खोल देते थे। भाव की तरंगों के वशीभूत होकर उनका मन दिव्य रसों में विचरण करता और इस तरह वे एक अन्य श्लोक का उच्चारण करते ( जो निम्न है )।**

শ্রী-কৃষ্ণ-রূপাদি-নিষেবণং বিনা
ব্যর্থানি মেঽহান্যখিলেন্দ্রিয়াণ্যলম্ ।

পাষাণ-শুষ্কেন্ধন-ভারকাণ্যহো
বিভর্মি বা তানি কথং হত-ত্রপঃ ॥২৮॥

**श्री-कृष्ण-रूपादि-निषेवणं विना**
**व्यर्थानि मेऽहान्यखिलेन्द्रियाण्यलम् ।**
**पाषाण-शुष्केन्धन-भारकाण्यहो**
**बिभर्मि वा तानि कथं हत-त्रपः ॥ २८ ॥**

**श्री-कृष्ण-रूप-आदि**—भगवान् श्रीकृष्ण के दिव्य रूप और लीलाओं की; **निषेवणम्**—सेवा; **विना**—बिना; **व्यर्थानि**—व्यर्थ; **मे**—मेरे; **अहानि**—दिन; **अखिल**—सभी; **इन्द्रियाणि**—इन्द्रियाँ; **अलम्**—सम्पूर्ण; **पाषाण**—पत्थर; **शुष्क**—शुष्क; **इन्धन**—लकड़ी; **भारकाणि**—भार; **अहो**—खेद है; **बिभर्मि**—मैं वहन करती हूँ; **वा**—अथवा; **तानि**—वे सब; **कथम्**—कैसे; **हत-त्रपः**—बिना लज्जा के।

### अनुवाद

**"'हे सखियों, यदि मैं श्रीकृष्ण के दिव्य रूप, गुणों तथा लीलाओं की सेवा नहीं करती, तो मेरे सारे दिन तथा मेरी सारी इन्द्रियाँ पूर्णतया व्यर्थ हो जायेंगे। अभी मैं पत्थर तथा सूखी लकड़ी जैसी अपनी इन्द्रियों का भार व्यर्थ ही ढो रही हूँ। मैं नहीं जानती कि निर्लज्ज बनकर कब तक मैं यह भार ढोती रहूँगी।'**

বংশী-গানামৃত-ধাম, লাবণ্যামৃত-জন্ম-স্থান,
যে না দেখে সে চাঁদ বদন ।
সে নয়নে কিবা কাজ, পড়ুক তার মুণ্ডে বাজ,
সে নয়ন রহে কি কারণ ॥২৯॥

**वंशी-गानामृत-धाम, लावण्यामृत-जन्म-स्थान,**
**य़े ना देखे से चाँद वदन ।**
**से नयने किबा काज, पड़ुक तार मुण्डे वाज,**
**से नयन रहे कि कारण ॥ २९ ॥**

**वंशी-गान-अमृत-धाम**—बांसुरी के गीतों से प्रकट अमृत धाम; **लावण्य-अमृत-जन्म-स्थान**—सौन्दर्य सुधा का जन्म स्थान; **य़े**—जो कोई; **ना**—नहीं; **देखे**—देखता; **से**—वह; **चाँद**—चन्द्र जैसा; **वदन**—मुख; **से**—वे; **नयने**—नेत्र; **किबा काज**—क्या लाभ;

**पड़ुक**—होने दो; **तार**—उसके; **मुण्डे**—सिर पर; **वाज**—वज्र; **से**—वे; **नयन**—नयन; **रहे**—रखते हैं; **कि**—क्या; **कारण**—कारण।

**अनुवाद**

**"उस मनुष्य की आँखों का क्या लाभ, जो कृष्ण के उस चन्द्र जैसे मुख को नहीं देखता, जो सारी सुन्दरता का जन्मस्थान है और उनकी वंशी के अमृततुल्य गीतों का आगार है? अरे! उस मनुष्य के सिर पर वज्रपात हो जाये! उसने ऐसी आँखें क्यों रखी हैं?**

**तात्पर्य**

कृष्ण का चन्द्रमा जैसा मुख अमृततुल्य गीतों का आगार है और उनकी वंशी का आवास है। यह समस्त शारीरिक सुन्दरता का भी मूल कारण है। गोपियों का विचार है कि यदि उनकी आँखें कृष्ण के ऐसे सुन्दर मुखड़े को नहीं देखतीं, तो इससे अच्छा यही होगा कि उन पर वज्रपात हो जाय। गोपियों के लिए कृष्ण के अतिरिक्त अन्य किसी का दर्शन करना अरुचिकर एवं घृणास्पद है। गोपियाँ कृष्ण के अतिरिक्त अन्य किसी को देखकर कभी भी प्रसन्न नहीं होतीं। उनकी आँखों के लिए एकमात्र सान्त्वना कृष्ण का चन्द्रमा जैसा सुन्दर मुख है; जो समस्त इन्द्रियों के लिए आराध्य है। जब वे कृष्ण के सुन्दर मुख को नहीं देख सकतीं, तब उन्हें सब कुछ शून्य दिखता है और उनकी इच्छा होती है कि उन पर वज्रपात हो जाये। कृष्ण के सौन्दर्य से विलग होने पर उन्हें अपनी आँखों को बनाये रखने का कोई औचित्य नहीं दिखता।

সখি হে, শুন, মোর হত বিধি-বল
মোর বপু-চিত্ত-মন, সকল ইন্দ্রিয়-গণ, ।
কৃষ্ণ বিনু সকল বিফল ॥৩০॥

**सखि हे, शुन, मोर हत विधि-बल**
**मोर वपु-चित्त-मन, सकल इन्द्रिय-गण, ।**
**कृष्ण विनु सकल विफल ॥ ३० ॥**

**सखि हे**—हे मेरी प्रिय सखी; **शुन**—कृपया सुनो; **मोर**—मेरा; **हत**—खोया हुआ; **विधि-बल**—भाग्य का बल; **मोर**—मेरा; **वपु**—शरीर; **चित्त**—चेतना; **मन**—मन; **सकल**—सभी;

**इन्द्रिय-गण**—इन्द्रियाँ; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **विनु**—बिना; **सकल**—सब कुछ; **विफल**—विफल।

अनुवाद

**"हे सखियों, कृपया मेरी बात सुनो। विधाता द्वारा प्रदत्त मेरी सारी शक्ति जाती रही है। कृष्ण के बिना मेरा शरीर, मेरी चेतना, मन तथा उसी के साथ मेरी सारी इन्द्रियाँ व्यर्थ हैं।**

কৃষ্ণের মধুর বাণী, অমৃতের তরঙ্গিণী,
তার প্রবেশ নাহি যে শ্রবণে ।
কাণাকড়ি-ছিদ্র সম, জানিহ সে শ্রবণ,
তার জন্ম হৈল অকারণে ॥ ৩১॥

**कृष्णेर मधुर वाणी, अमृतेर तरङ्गिणी,**
**तार प्रवेश नाहि ये श्रवणे ।**
**काणाकड़ि-छिद्र सम, जानिह से श्रवण,**
**तार जन्म हैल अकारणे ॥ ३१॥**

**कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण की; **मधुर**—मधुर; **वाणी**—वाणी; **अमृतेर**—अमृत की; **तरङ्गिणी**—लहरें; **तार**—उनका; **प्रवेश**—प्रवेश; **नाहि**—नहीं है; **ये**—जो; **श्रवणे**—सुनने में; **काणाकड़ि**—टूटा हुआ शंख; **छिद्र**—छिद्र; **सम**—की तरह; **जानिह**—समझो; **से**—वह; **श्रवण**—कान; **तार**—उसका; **जन्म**—जन्म; **हैल**—हो गया; **अकारणे**—व्यर्थ।

अनुवाद

**"कृष्ण की कथाएँ अमृत की तरंगों के समान हैं। यदि ऐसा अमृत किसी के कानों में प्रविष्ट नहीं करता, तो वे कान टूटे शंख के छिद्र के समान हैं। ऐसे कान को बनाने का प्रयोजन व्यर्थ है।**

तात्पर्य

इस के सम्बन्ध में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर *श्रीमद्भागवत* (२.३.१७-२४) से निम्नलिखित श्लोक उद्धृत करते हैं :

*आयुर्हरति वै पुंसामुद्यन्नस्तं च यन्नसौ।*
*तस्यर्ते यत्क्षणो नीत उत्तमश्लोकवार्तया॥*

*तरवः किं न जीवन्ति भस्त्राः किं न श्वसन्त्युत।*
*न खादन्ति न मेहन्ति किं ग्रामे पशवोऽपरे॥*
*श्वविड्वराहोष्ट्रखरैः संस्तुतः पुरुषः पशुः।*
*न यत्कर्ण पथोपेतो जातु नाम गदाग्रजः॥*
*बिले बतोरुक्रमविक्रमान् ये*
*न शृण्वतः कर्णपुटे नरस्य।*
*जिह्वासती दार्दुरिकेव सूत*
*न चोपगायत्युरुगाय गाथाः॥*
*भारः परं पट्टकिरीटजुष्ट-*
*मप्युत्तमाङ्गं न नमेन्मुकुन्दम्।*
*शावौ करौ नो कुरुते सपर्यां*
*हरेर्लसत्काञ्चनकङ्कणौ वा॥*
*बर्हायिते ते नयने नराणां*
*लिङ्गानि विष्णोर्न निरीक्षतो ये।*
*पादौ नृणां तौ द्रुमजन्मभाजौ*
*क्षेत्राणि नानुव्रजतो हरेर्यौ॥*
*जीवञ्छवो भागवताङ्घ्रिरेणुं*
*न जातु मर्त्योऽभिलभेत यस्तु।*
*श्रीविष्णुपद्या मनुजस्तुलस्याः*
*श्वसञ्छवो यस्तु न वेद गन्धम्॥*
*तदश्मसारं हृदयं बतेदं*
*यद्गृह्यमाणैर्हरिनाम धेयैः।*
*न विक्रियेताथ यदा विकारो*
*नेत्रे जलं गात्ररुहेषु हर्षः॥*

"सूर्य उदय तथा अस्त होने के साथ हर एक की आयु को हरता है, सिवाय उसके जो सर्वमंगलकारी भगवान् की कथाओं की चर्चा में समय का उपयोग करता है। क्या वृक्ष जीवित नहीं रहते? क्या लुहार की धौंकनी श्वास नहीं लेती? क्या हमारे चारों ओर पशु भोजन तथा वीर्यस्खलन नहीं करते? जो लोग

कुत्तों, सुअरों, ऊँटों तथा गधों की तरह हैं, वे उन लोगों की प्रशंसा करते हैं, जो समस्त पापों के उद्धारक भगवान् कृष्ण की दिव्य लीलाओं का कभी भी श्रवण नहीं करते। जिसने भगवान् के पराक्रम तथा उनकी अद्‌भुत लीलाओं के विषय में नहीं सुना और जिसने भगवान् विषयक सुन्दर गीतों को न तो गाया न कीर्तन किया, उसके कान मानो साँपों के रन्ध्रों के समान और जीभ मानो मेंढक की जीभ के समान है। भले ही कोई शीश पर रेशमी पगड़ी क्यों न पहने हो, यदि वह मुक्तिदाता भगवान् के समक्ष झुकता नहीं, तो उसे केवल भारी बोझ ही समझना चाहिए। हाथ भले ही चमकीले कंगनों से सुशोभित क्यों न हों, यदि वे भगवान् हरि की सेवा नहीं करते, तो उन्हें मृतक पुरुष के हाथ के समान समझना चाहिए। जो आँखें भगवान् विष्णु के स्वरूप (उनके रूप, नाम, गुण आदि) को नहीं देखतीं, वे मोरपंख में बनी आँखों के समान हैं। जो पाँव तीर्थ स्थानों को नहीं जाते (जहाँ भगवान् का स्मरण किया जाता है), वे वृक्षों के तनों के समान हैं। जिस व्यक्ति ने कभी भी भगवान् के शुद्ध भक्त की चरण-धूलि अपने सिर पर धारण नहीं की, समझो कि वह शव है। जिस व्यक्ति ने भगवान् के चरणकमलों पर अर्पित तुलसी-दल की सुगन्ध का अनुभव नहीं किया, वह श्वास लेते हुए भी मृतक तुल्य है। भावावेश के समय आँखें अश्रु से पूरित हो जाती हैं और रोमांच हो उठता है। वह हृदय अवश्य ही लोहे का बना हुआ है, जिसमें भगवान् के नाम का मनोयोग के साथ जप करने पर भी परिवर्तन न हो और भावावेश न हो।"

কৃষ্ণের অধরামৃত, কৃষ্ণ-গুণ-চরিত,
সুধা-সার-স্বাদ-বিনিন্দন ।
তার স্বাদ যে না জানে, জন্মিয়া না মৈল কেনে,
সে রসনা ভেক জিহ্বা সম ॥৩২॥

**कृष्णेर अधरामृत, कृष्ण-गुण-चरित,**
**सुधा-सार-स्वाद-विनिन्दन ।**
**तार स्वाद ये ना जाने, जन्मिया ना मैल केने,**
**से रसना भेक जिह्वा सम ॥ ३२ ॥**

**कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण के; **अधर-अमृत**—अधरों का अमृत; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण के; **गुण**—गुण; **चरित**—कार्यकलाप; **सुधा-सार**—सुधा का सार; **स्वाद**—स्वाद; **विनिन्दन**—बढ़कर है; **तार**—उनका; **स्वाद**—स्वाद; **य्रे**—जो कोई; **ना जाने**—नहीं जानता; **जन्मिया**—जन्म लेकर; **ना मैल**—नहीं मरा; **केने**—क्यों; **से**—वह; **रसना**—जिह्वा; **भेक**—मेंढक की; **जिह्वा**—जिह्वा; **सम**—समान।

अनुवाद

**"भगवान् कृष्ण के होठों का अमृत तथा उनके दिव्य गुण और चरित्र, सभी अमृत के सार के स्वाद को तुच्छ बनाने वाले हैं, और ऐसे अमृत का आस्वादन करने में कोई दोष नहीं है। जो इसका आस्वादन नहीं करता, उसे जन्म लेते ही मर जाना चाहिए और उसकी जीभ मेंढक की जीभ के समान समझी जानी चाहिए।**

মৃগ-মদ নীলোৎপল, মিলনে যে পরিমল,
যেই হরে তার গর্ব-মান ।
হেন কৃষ্ণ-অঙ্গ-গন্ধ, যার নাহি সে সম্বন্ধ,
সেই নাসা ভস্ত্রার সমান ॥৩৩॥

**मृग-मद नीलोत्पल, मिलने य्रे परिमल,**
**य्रेइ हरे तार गर्व-मान ।**
**हेन कृष्ण-अङ्ग-गन्ध, य्रार नाहि से सम्बन्ध,**
**सेइ नासा भस्त्रार समान ॥ ३३ ॥**

**मृग-मद**—कस्तूरी की सुगन्ध; **नील-उत्पल**—नील कमल; **मिलने**—मिलने में; **य्रे**—जो; **परिमल**—सुगन्ध; **य्रेइ**—नहीं; **हरे**—हर लेती है; **तार**—उनके; **गर्व**—गर्व; **मान**—तथा मान सम्मान; **हेन**—ऐसी; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण के; **अङ्ग**—शरीर की; **गन्ध**—सुगन्ध; **य्रार**—जिसकी; **नाहि**—नहीं; **से**—वह; **सम्बन्ध**—सम्बन्ध; **सेइ**—ऐसी; **नासा**—नासिका; **भस्त्रार**—धोंकनी; **समान**—समान।

अनुवाद

**"कृष्ण के शरीर की सुगन्ध कस्तूरी की सुगन्ध के साथ मिली नीले कमल के फूल की सुगन्ध के समान है। जिसने कृष्ण की इस सुगन्ध को नहीं सूँघा, उसके नथुने लोहार की धौंकनी के तुल्य हैं। वस्तुतः ऐसी सुगन्ध कृष्ण के शरीर की सुगन्ध के आगे फीकी पड़ जाती है।**

কৃষ্ণ-কর-পদ-তল, কোটি-চন্দ্র-সুশীতল,
তার স্পর্শ যেন স্পর্শ-মণি ।
তার স্পর্শ নাহি যার, সে যাউক্ছারখার,
সেই বপু লৌহ-সম জানি ॥৩৪॥

**कृष्ण-कर-पद-तल, कोटि-चन्द्र-सुशीतल,**
**तार स्पर्श य़ेन स्पर्श-मणि ।**
**तार स्पर्श नाहि य़ार, से य़ाउक्छारखार,**
**सेइ वपु लौह-सम जानि ॥ ३४॥**

**कृष्ण**—भगवान् कृष्ण की; **कर**—हथेलियाँ; **पद-तल**—उनके पाँव के तलवे; **कोटि-चन्द्र**—लाखों चन्द्रमाओं के प्रकाश के समान; **सु-शीतल**—शीतल और सुखप्रद; **तार**—उनके; **स्पर्श**—स्पर्श; **य़ेन**—नहीं; **स्पर्श-मणि**—पारस पत्थर; **तार**—उनके; **स्पर्श**—स्पर्श; **नाहि**—नहीं; **य़ार**—जिसका; **से**—वह व्यक्ति; **य़ाउक्**—उसे जाने दो; **छारखार**—नष्ट होना; **सेइ वपु**—वह शरीर; **लौह-सम**—लोहे के समान; **जानि**—मैं जानता हूँ।

**अनुवाद**

**"कृष्ण के हाथ तथा पैर के तलवे इतने शीतल और सुहावने हैं कि उनकी उपमा करोड़ों चन्द्रमाओं के प्रकाश से ही दी जा सकती है। जिसने ऐसे हाथों तथा पैरों का स्पर्श किया है, उसने सचमुच पारस पत्थर के प्रभाव का अनुभव किया है। यदि किसी ने उनका स्पर्श नहीं किया, तो उसका जीवन व्यर्थ है और उसका शरीर लोहे के समान है।"**

করি' এত বিলপন, প্রভু শচী-নন্দন,
উঘাড়িয়া হৃদয়ের শোক ।
দৈন্য-নির্বেদ-বিষাদে, হৃদয়ের অবসাদে,
পুনরপি পড়ে এক শ্লোক ॥৩৫॥

**करि' एत विलपन, प्रभु शची-नन्दन,**
**उघाड़िया हृदयेर शोक ।**
**दैन्य-निर्वेद-विषादे, हृदयेर अवसादे,**
**पुनरपि पड़े एक श्लोक ॥ ३५॥**

**करि'**—करते हुए ; **एत**—ऐसा; **विलपन**—विलाप करते हुए; **प्रभु**—महाप्रभु; **शची-नन्दन**—शची माता के पुत्र; **उघाड़िया**—खोलकर; **हृदयेर**—हृदय का; **शोक**—शोक; **दैन्य**—

दीनता; **निर्वेद**—निराशा; **विषादे**—शोक में; **हृदयेर**—हृदय के; **अवसादे**—दुख; **पुनरपि**—बार बार; **पड़े**—पढ़ते; **एक**—एक; **श्लोक**—श्लोक।

**अनुवाद**

**इस प्रकार विलाप करते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने हृदय के भीतर शोक के कपाट खोल दिये। उन्होंने हताश, दीन एवं उदास होकर अवसाद भरे हृदय से बार-बार एक श्लोक पढ़ा।**

**तात्पर्य**

*भक्तिरसामृत-सिन्धु* में *दैन्य* शब्द की परिभाषा इस प्रकार दी गई है, "जब दुःख, भय तथा अपराध-भाव मिलते हैं, तो मनुष्य अपने आपको धिक्कारता है। धिक्कारने का यह भाव *दीनता* है। दीनता की स्थिति में व्यक्ति अपने आपको शरीर से निष्क्रिय अनुभव करता है, वह क्षमायाचना करता है और उसकी चेतना विचलित हो जाती है। उसका मन भी अशान्त हो जाता है और अन्य अनेक लक्षण दिखाई देते हैं।" *निर्वेद* शब्द की व्याख्या भी *भक्तिरसामृत-सिन्धु* में मिलती है—"मनुष्य अपना कर्तव्य पूरा न कर सकने के कारण दुःख तथा विच्छेद एवं उसी के साथ साथ ईर्ष्या तथा पश्चात्ताप का अनुभव करता है। इस तरह से जो निराशा उत्पन्न होती है, वह *निर्वेद* कहलाती है। एक बार इस निराशा से ग्रस्त होने पर विचार, अश्रु, शारीरिक कान्ति का ह्रास, दैन्य तथा भारी उच्छवास उत्पन्न होते हैं।" *विषाद* की व्याख्या भी *भक्तिरसामृत-सिन्धु* में हुई है—"जब व्यक्ति जीवन का वांछित लक्ष्य प्राप्त करने में असफल हो जाता है और वह अपने समस्त अपराधों के लिए पश्चात्ताप करता है, तो खेद की यह दशा *विषाद* कहलाती है।" अवसाद के लक्षण भी बतलाये गये हैं, "मनुष्य अपनी मूल स्थिति पुनः प्राप्त करने के लिए लालायित रहता है और पूछता रहता है कि इसे किस तरह प्राप्त किया जाये। गम्भीर विचार, दीर्घ श्वास, रोना तथा विलाप के साथ ही शरीर का रंग बदलना और जीभ का सूखना—ये लक्षण भी इस अवस्था में दृष्टिगत होते हैं।"

*भक्तिरसामृत-सिन्धु* में इस प्रकार के ३३ घातक लक्षणों का उल्लेख हुआ है। ये शब्दों से, भौहों से तथा आँखों से व्यक्त होते हैं। ये लक्षण *व्यभिचारी भाव* कहलाते हैं। यदि ये बने रहते हैं, तो कभी-कभी *सञ्चारी भाव* कहलाते हैं।

যদা যাতো দৈবান্মধু-রিপুরসৌ লোচন-পথং
তদাস্মাকং চেতো মদন-হতকেনাহৃতমভূৎ ।
পুনর্যস্মিন্নেষ ক্ষণমপি দৃশোরেতি পদবীং
বিধাস্যামস্তস্মিন্নখিল-ঘটিকা রত্ন-খচিতাঃ ॥৩৬॥

**यदा यातो दैवान्मधु-रिपुरसौ लोचन-पथं**
**तदास्माकं चेतो मदन-हतकेनाहृतमभूत् ।**
**पुनर्यस्मिन्नेष क्षणमपि दृशोरेति पदवीं**
**विधास्यामस्तस्मिन्नखिल-घटिका रत्न-खचिताः ॥ ३६ ॥**

**यदा**—जब; **यातः**—प्रवेश करना; **दैवात्**—अचानक; **मधु-रिपुः**—मधु दैत्य के शत्रु; **असौ**—वे; **लोचन-पथम्**—नेत्रों के मार्ग में; **तदा**—उस समय; **अस्माकम्**—हमारी; **चेतः**—चेतना; **मदन-हतकेन**—दुष्ट कामदेव से; **आहृतम्**—चुराई गई; **अभूत्**—हो गई है; **पुनः**—फिर; **यस्मिन्**—जब; **एषः**—कृष्ण; **क्षणम् अपि**—एक क्षण के लिए भी; **दृशोः**—दो नेत्रों का; **एति**—जाते हैं; **पदवीम्**—पथ; **विधास्यामः**—हम बनायेंगे; **तस्मिन्**—उस समय; **अखिल**—सब; **घटिकाः**—समय के संकेत; **रत्न-खचिताः**—रत्न-जड़ित।

## अनुवाद

**"'यदि दैववश कृष्ण का दिव्य रूप मेरी दृष्टि के सामने आये, तो कष्टों से व्यथित मेरा हृदय, मूर्तिमन्त आनन्द रूप कामदेव द्वारा चुरा लिया जाएगा। चूँकि मैं कृष्ण के सुन्दर रूप को जी-भरकर नहीं देख सकी, अतएव जिस क्षण मैं इस रूप को पुनः देखूँगी, तो उस क्षण को मैं अनेक रत्नों से अलंकृत करूँगी।'**

## तात्पर्य

यह श्लोक रामानन्दराय-कृत *जगन्नाथ-वल्लभ नाटक* (३.११) से लिया गया है। यह श्रीमती राधारानी द्वारा कहा गया है।

যে কালে বা স্বপনে, দেখিনু বংশী-বদনে,
সেই কালে আইলা দুই বৈরি ।
'আনন্দ' আর 'মদন', হরি' নিল মোর মন,
দেখিতে না পাইনু নেত্র ভরি' ॥৩৭॥

**ये काले वा स्वपने, देखिनु वंशी-वदने,**
**सेइ काले आइला दुइ वैरि ।**

**'आनन्द' आर 'मदन', हरि' निल मोर मन,**
**देखिते ना पाइनु नेत्र भरि' ॥ ३७॥**

**ये काले**—उस समय; **वा स्वपने**—अथवा स्वप्न में; **देखिनु**—मैंने देखा; **वंशी-वदने**—भगवान् कृष्ण का बांसुरी बजाता चेहरा; **सेइ काले**—उस समय; **आइला**—प्रकट हुए; **दुइ**—दो; **वैरि**—शत्रु; **आनन्द**—आनन्द; **आर**—और; **मदन**—कामदेव; **हरि'**—चुराकर; **निल**—ले लिया; **मोर**—मेरा; **मन**—मन; **देखिते**—देखने के लिए; **ना**—नहीं; **पाइनु**—मैं सक्षम थी; **नेत्र**—नेत्र; **भरि'**—भरकर।

अनुवाद

**"जब भी, यहाँ तक कि स्वप्न में भी, मुझे कृष्ण के मुख तथा उनकी वंशी के दर्शन का अवसर मिलता था, तो मेरे सामने दो शत्रु प्रकट हो जाते थे—आनन्द तथा कामदेव। चूँकि ये मेरे चित्त को हर लेते थे, अतएव मैं नेत्र-भरकर कृष्ण के मुख को न देख सकी।**

পুনঃ যদি কোন ক্ষণ, করায় কৃষ্ণ দরশন
তবে সেই ঘটী-ক্ষণ-পল ।
দিয়া মাল্য-চন্দন, নানা রত্ন-আভরণ,
অলঙ্কৃত করিমু সকল ॥৩৮॥

**पुनः यदि कोन क्षण, कराय कृष्ण दरशन**
**तबे सेइ घटी-क्षण-पल ।**
**दिया माल्य-चन्दन, नाना रत्न-आभरण,**
**अलङ्कृत करिमु सकल ॥ ३८॥**

**पुनः**—पुनः; **यदि**—यदि; **कोन**—कोई; **क्षण**—क्षण; **कराय**—सहायता करता है; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **दरशन**—दर्शन करने में; **तबे**—तब; **सेइ**—वे; **घटी-क्षण-पल**—घड़ियाँ, क्षण और घंटे; **दिया**—भेंट करना; **माल्य-चन्दन**—माला और चन्दन लेप; **नाना**—नाना प्रकार के; **रत्न**—रत्न; **आभरण**—आभूषण; **अलङ्कृत**—सजाना; **करिमु**—मैं करूँगी; **सकल**—सब।

अनुवाद

**"यदि दैववश ऐसा क्षण आये कि मैं पुनः कृष्ण को देख पाऊँ तो मैं उन क्षणों, घड़ियों तथा घंटों की फूल की मालाओं तथा चन्दन-लेप से पूजा करूँगी और उन्हें सभी प्रकार के रत्नों तथा आभूषणों से सजाऊँगी।"**

ক্ষণে বাহ্য হৈল মন, আগে দেখে দুই জন,
তাঁরে পুছে,—আমি না চৈতন্য? ।
স্বপ্ন-প্রায় কি দেখিনু, কিবা আমি প্রলাপিনু,
তোমরা কিছু শুনিয়াছ দৈন্য? ॥৩৯॥

**क्षणे बाह्य हैल मन, आगे देखे दुइ जन,**
**ताँरे पुछे,—आमि ना चैतन्य? ।**
**स्वप्न-प्राय कि देखिनु, किबा आमि प्रलापिनु,**
**तोमरा किछु शुनियाछ दैन्य? ॥ ३९ ॥**

**क्षणे**—एक क्षण में; **बाह्य**—बाहरी; **हैल**—हुआ; **मन**—मन; **आगे**—आगे; **देखे**—देखा; **दुइ जन**—दो व्यक्ति; **ताँरे**—उनको; **पुछे**—पूछते हैं; **आमि**—मैं; **ना**—नहीं; **चैतन्य**—चेतन; **स्वप्न-प्राय**—लगभग स्वप्नावस्था में; **कि**—क्या; **देखिनु**—मैंने देखा है; **किबा**—क्या; **आमि**—मैं; **प्रलापिनु**—पागलपन में बोली हूँ; **तोमरा**—तुमको; **किछु**—कुछ; **शुनियाछ**—सुना है; **दैन्य**—दीनता।

## अनुवाद

**क्षण-भर में श्री चैतन्य महाप्रभु को बाह्य चेतना आ गई और उन्होंने अपने समक्ष दो व्यक्तियों को देखा। महाप्रभु ने उनसे पूछा, "क्या मैं सचेत हूँ? मैं कौन से स्वपन देख रहा था? मैं कैसा प्रलाप कर रहा था? क्या आपने दैन्य के कुछ वचन सुने?"**

## तात्पर्य

जब श्री चैतन्य महाप्रभु इस तरह भावावेश में बोल रहे थे, तो उन्होंने अपने सामने दो व्यक्तियों को देखा। एक थे उनके सचिव स्वरूप दामोदर तथा दूसरे थे राय रामानन्द। बाह्य चेतना आने पर उन्होंने उन दोनों को उपस्थित देखा और यद्यपि महाप्रभु अभी भी श्रीमती राधारानी के भाव में बातें कर रहे थे, किन्तु वे तुरन्त ही पूछने लगे कि क्या वे वही श्री चैतन्य महाप्रभु हैं।

শুন মোর প্রাণের বান্ধব
নাহি কৃষ্ণ-প্রেম-ধন, দরিদ্র মোর জীবন, ।
দেহেন্দ্রিয় বৃথা মোর সব ॥৪০॥

शुन मोर प्राणेर बान्धव
नाहि कृष्ण-प्रेम-धन, दरिद्र मोर जीवन, ।
देहेन्द्रिय वृथा मोर सब ॥ ४० ॥

**शुन**—कृपया सुनो; **मोर**—मेरे; **प्राणेर**—जीवन के; **बान्धव**—मित्र; **नाहि**—कोई नहीं हैं; **कृष्ण-प्रेम-धन**—कृष्ण-प्रेम की सम्पत्ति; **दरिद्र**—दरिद्र, निर्धन; **मोर**—मेरा; **जीवन**—जीवन; **देह-इन्द्रिय**—मेरे शरीर के सारे अंग तथा इन्द्रियाँ; **वृथा**—वृथा, व्यर्थ; **मोर**—मेरा; **सब**—सब।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु ने आगे कहा, "हे मित्रों, तुम लोग मेरे प्राण हो, अतएव मैं तुम्हें बतलाता हूँ कि मेरे पास कृष्ण-प्रेमरूपी धन नहीं है। इसलिए मेरा जीवन दरिद्र है। मेरे अंग तथा इन्द्रियाँ व्यर्थ हैं।**

পুনঃ কহে,—হায় হায়, শুন, স্বরূপ-রামরায়,
এই মোর হৃদয়-নিশ্চয় ।
শুনি করহ বিচার, হয়, নয়—কহ সার,
এত বলি' শ্লোক উচ্চারয় ॥৪১॥

पुनः कहे,—हाय हाय, शुन, स्वरूप-रामराय,
एइ मोर हृदय-निश्चय ।
शुनि करह विचार, हय, नय—कह सार,
एत बलि' श्लोक उच्चारय ॥ ४१ ॥

**पुनः**—पुनः; **कहे**—कहते; **हाय हाय**—हाय, हाय; **शुन**—कृपया सुनो; **स्वरूप-रामराय**—मेरे प्रिय स्वरूप दामोदर और रामानन्द राय; **एइ**—यह; **मोर**—मेरा; **हृदय-निश्चय**—मेरे हृदय का निश्चय; **शुनि**—सुनकर; **करह**—जरा करो; **विचार**—विचार; **हय, नय**—ठीक या गलत; **कह सार**—मुझे सार बताओ; **एत बलि'**—यह कहकर; **श्लोक**—एक दूसरा श्लोक; **उच्चारय**—बोलते।

अनुवाद

**निराशाभरे शब्दों में उन्होंने पुनः स्वरूप दामोदर तथा राय रामानन्द को सम्बोधित किया, "हाय! मेरे मित्रों, अब तुम मेरे हृदय के निश्चय को जान सकते हो और यह जान लेने के बाद तुम यह निर्णय करो कि मैं सही**

**हूँ या नहीं। तुम इस बारे में ठीक से कह सकते हो।" इसके बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने दूसरे श्लोक का उच्चारण किया।**

ক-ই-অবরহি-অং পেম্মং ণ হি হোই মাণুসে লোএ ।
জ-ই হোই কস্স বিরহে হোন্তম্মি কো জীঅ-ই ॥৪২॥

**क-इ-अवरहि-अं पेम्मं ण हि होइ माणुसे लोए ।**
**ज-इ होइ कस्स विरहे होन्तम्मि को जीअ-इ ॥ ४२ ॥**

**क-इ-अवरहि-अम्**—धोखा देने की किसी प्रवृत्ति के बिना, भौतिकता के चार सिद्धान्त धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष से सम्बन्धित किसी अभिलाषा से रहित; **पेम्मम्**—भगवत् प्रेम; **ण**—कभी नहीं; **हि**—निश्चित रूप से; **होइ**—होता है; **माणुसे**—मानव समाज में; **लोए**—इस संसार में; **ज-इ**—यदि; **होइ**—हो; **कस्स**—किसके; **विरहे**—विरह में; **होन्तम्मि**—है; **को**—कौन; **जीअ-इ**—रहता है।

अनुवाद

**"'छलरहित भगवत्प्रेम इस भौतिक जगत् में सम्भव नहीं है। यदि ऐसा प्रेम है, तो उसमें विरह नहीं हो सकता, क्योंकि विरह में कोई कैसे जीवित रह सकता है?'**

तात्पर्य

यह श्लोक प्राकृत भाषा में है। इसका सही संस्कृत रूपान्तर होगा—कैतवरहितं प्रेमा न हि भवति मानुषे लोके/ यदि भवति कस्य विरहो विरहे सत्यपि को जीवति।

অকৈতব কৃষ্ণ-প্রেম, যেন জাম্বূনদ-হেম,
সেই প্রেমা নৃলোকে না হয় ।
যদি হয় তার যোগ, না হয় তবে বিয়োগ,
বিয়োগ হৈলে কেহ না জীয়য় ॥৪৩॥

**अकैतव कृष्ण-प्रेम, य़ेन जाम्बूनद-हेम,**
**सेइ प्रेमा नृलोके ना हय ।**
**य़दि हय तार य़ोग, ना हय तबे वियोग,**
**वियोग हैले केह ना जीयय ॥ ४३ ॥**

**अकैतव कृष्ण-प्रेम**—कृष्ण के सच्चे प्रेम; **ग्रेन**—की तरह; **जाम्बू-नद-हेम**—जाम्बू नदी का स्वर्ण; **सेइ प्रेमा**—वह ईश्वर प्रेम; **नृ-लोके**—भौतिक जगत् में; **ना हय**—सम्भव नहीं; **ग्रदि**—यदि; **हय**—है; **तार**—इसके साथ; **ग्रोग**—सम्बन्ध; **ना**—नहीं; **हय**—है; **तबे**—तब; **वियोग**—विरह; **वियोग**—विरह; **हैले**—यदि है; **केह**—कोई; **ना जीयय**—नहीं जी सकता।

### अनुवाद

**"कृष्ण का शुद्ध प्रेम जाम्बू नदी से मिलने वाले सोने की तरह है, जो मानव समाज में नहीं पाया जाता। यदि यह होता तो इसमें वियोग नहीं होता। वियोग होने से कोई जीवित नहीं रह सकता।"**

এত কহি' শচী-সুত, শ্লোক পড়ে অদ্ভুত,
শুনে দুঁহে এক-মন হঞা ।
আপন-হৃদয়-কাজ, কহিতে বাসিয়ে লাজ,
তবু কহি লাজ-বীজ খাঞা ॥ ৪৪ ॥

**एत कहि' शची-सुत, श्लोक पड़े अद्भुत,**
**शुने दुँहे एक-मन हञा ।**
**आपन-हृदय-काज, कहिते वासिये लाज,**
**तबु कहि लाज-बीज खाञा ॥ ४४ ॥**

**एत कहि'**—यह कहकर; **शची-सुत**—श्रीमती शचीमाता के पुत्र; **श्लोक**—श्लोक; **पड़े**—पढ़ा; **अद्भुत**—अद्भुत; **शुने**—सुनते हैं; **दुँहे**—दोनों व्यक्ति; **एक-मन हञा**—एकाग्र चित्त से; **आपन-हृदय-काज**—अपने हृदय की गतिविधियाँ; **कहिते**—कहते हुए; **वासिये**—मैं अनुभव करता हूँ; **लाज**—लज्जा; **तबु**—फिर भी; **कहि**—मैं कहता हूँ; **लाज-बीज**—लज्जा का बीज; **खाञा**—समाप्त करके।

### अनुवाद

**इस प्रकार कहते हुए श्रीमती शचीमाता के पुत्र ने एक दूसरा अद्भुत श्लोक सुनाया, जिसे रामानन्द राय एवं स्वरूप दामोदर ने एकाग्र चित्त से सुना। श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "मैं अपने मन के कार्य बताने में लज्जा का अनुभव कर रहा हूँ। फिर भी मैं सारी औपचारिकताओं को छोड़कर अपने मन की बात कहूँगा। सुनो।"**

ন প্রেম-গন্ধোঽস্তি দরাপি মে হরৌ
ক্রন্দামি সৌভাগ্য-ভরং প্রকাশিতুম্ ।
বংশী-বিলাস্যানন-লোকনং বিনা
বিভর্মি যত্প্রাণ-পতঙ্গকান্বৃথা ॥৪৫॥

**न प्रेम-गन्धोऽस्ति दरापि मे हरौ**
**क्रन्दामि सौभाग्य-भरं प्रकाशितुम् ।**
**वंशी-विलास्यानन-लोकनं विना**
**बिभर्मि यत्प्राण-पतङ्गकान्वृथा ॥ ४५ ॥**

**न**—कभी नहीं; **प्रेम-गन्धः**—ईश्वर प्रेम की गंध; **अस्ति**—है; **दरा अपि**—जरा भी; **मे**—मेरा; **हरौ**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् में; **क्रन्दामि**—मैं रोता हूँ; **सौभाग्य-भरम्**—मेरे भाग्य की सीमा; **प्रकाशितुम्**—प्रदर्शित करने के लिए; **वंशी-विलासि**—महान् वंशी वादक के; **आनन**—मुख पर; **लोकनम्**—देखे; **विना**—बिना; **बिभर्मि**—मैं उठाता हूँ; **यत्**—क्योंकि; **प्राण-पतङ्गकान्**—मेरा पतंगों जैसा जीवन; **वृथा**—व्यर्थ।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु ने आगे कहा, "'हे मित्रों, मेरे हृदय में रंचमात्र भी भगवत्-प्रेम नहीं है। जब तुम लोग मुझे विरह में रोते देखते हो, तो मैं अपने परम सौभाग्य का मात्र झूठा प्रदर्शन कर रहा होता हूँ। निस्सन्देह, मुरली बजाते हुए कृष्ण के सुन्दर मुखमण्डल का दर्शन किये बिना मैं एक कीट की तरह व्यर्थ जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।'**

দূরে শুদ্ধ-প্রেম-গন্ধ, কপট প্রেমের বন্ধ,
সেহ মোর নাহি কৃষ্ণ-পায় ।
তবে যে করি ক্রন্দন, স্ব-সৌভাগ্য প্রখ্যাপন,
করি, ইহা জানিহ নিশ্চয় ॥৪৬॥

**दूरे शुद्ध-प्रेम-गन्ध, कपट प्रेमेर बन्ध,**
**सेह मोर नाहि कृष्ण-पाय ।**
**तबे ये करि क्रन्दन, स्व-सौभाग्य प्रख्यापन,**
**करि, इहा जानिह निश्चय ॥ ४६ ॥**

**दूरे**—दूर; **शुद्ध-प्रेम-गन्ध**—शुद्ध प्रेमाभक्ति की गंध; **कपट**—झूठा; **प्रेमेर**—ईश्वर प्रेम; **बन्ध**—बन्धन; **सेह**—वह; **मोर**—मेरा; **नाहि**—नहीं है; **कृष्ण-पाय**—कृष्ण के चरणकमलों

में; **तबे**—किन्तु; **ये**—वह; **करि**—मैं करता हूँ; **क्रन्दन**—रोना; **स्व-सौभाग्य**—मेरा सौभाग्य; **प्रख्यापन**—प्रदर्शन; **करि**—मैं करता हूँ; **इहा**—यह; **जानिह**—जानो; **निश्चय**—निश्चित रूप से।

अनुवाद

**"वास्तव में मुझे कृष्ण से बिल्कुल भी प्रेम नहीं है। मैं जो भी करता हूँ, वह सब कपटपूर्ण भगवत्प्रेम का दिखावा है। जब मैं रोता हूँ, तो मात्र अपने सौभाग्य का मिथ्या प्रदर्शन करता हूँ। इसे निश्चत रूप से जानो।**

যাতে বংশী-ধ্বনি-সুখ, না দেখি' সে চাঁদ মুখ,
যদ্যপি নাহিক 'আলম্বন' ।
নিজ-দেহে করি প্রীতি, কেবল কামের রীতি,
প্রাণ-কীটের করিয়ে ধারণ ॥৪৭॥

**याते वंशी-ध्वनि-सुख, ना देखि' से चाँद मुख,**
**यद्यपि नाहिक 'आलम्बन' ।**
**निज-देहे करि प्रीति, केवल कामेर रीति,**
**प्राण-कीटेर करिये धारण ॥ ४७॥**

**याते**—जिसमें; **वंशी-ध्वनि-सुख**—वंशीवादन की ध्वनि सुनने का सुख; **ना देखि'**—नहीं देखा; **से**—वह; **चाँद मुख**—चन्द्रमुख; **यद्यपि**—यद्यपि; **नाहिक**—नहीं है; **आलम्बन**—प्रेमी-प्रेमिका का मिलन; **निज**—अपने; **देहे**—शरीर में; **करि**—मैं करता हूँ; **प्रीति**—प्रेम; **केवल**—केवल; **कामेर**—कामवासना की; **रीति**—रीति; **प्राण**—जीवन की; **कीटेर**—मक्खी की; **करिये**—करता हूँ; **धारण**—धारण।

अनुवाद

**"यद्यपि मैं वंशी बजाते हुए कृष्ण का चन्द्रमुख नहीं देख पाता, न ही मेरी उनसे भेंट होने की कोई सम्भावना है, तब भी मैं अपने शरीर की देखभाल करता हूँ। यही कामवासना की रीति है। इस प्रकार मैं अपने कीट सदृश जीवन को धारण किए रहता हूँ।**

तात्पर्य

इस सन्दर्भ में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर का कहना है कि प्रिय परमेश्वर ही परम आश्रय हैं। भगवान् ही परम विषय हैं और भक्त आश्रय हैं।

विषय तथा आश्रय का मिलन *आलम्बन* कहलाता है। आश्रय सुनता है और विषय वंशी बजाता है। जब आश्रय कृष्ण के मुख-चन्द्र को नहीं देख सकता और न उसमें उन्हें देखने की उत्सुकता रहती है, तो यह *आलम्बन-विहीन* होने का संकेत है। बाह्य रूप से ऐसी कल्पना करने से मनुष्य की कामवासनाओं की तुष्टि मात्र होती है और इस तरह वह निरुद्देश्य जीवित रहता है।

কৃষ্ণ-প্রেমা সুনির্মল, যেন শুদ্ধ-গঙ্গা-জল,
সেই প্রেমা—অমৃতের সিন্ধু ।
নির্মল সে অনুরাগে, না লুকায় অন্য দাগে,
শুক্ল-বস্ত্রে যৈছে মসী-বিন্দু ॥ ৪৮॥

**कृष्ण-प्रेमा सुनिर्मल, ग्रेन शुद्ध-गङ्गा-जल,**
**सेइ प्रेमा—अमृतेर सिन्धु ।**
**निर्मल से अनुरागे, ना लुकाय अन्य दागे,**
**शुक्ल-वस्त्रे ग्रैछे मसी-बिन्दु ॥ ४८ ॥**

**कृष्ण-प्रेमा**—कृष्ण-प्रेम; **सु-निर्मल**—पूर्णतया निर्मल; **ग्रेन**—की तरह; **शुद्ध-गङ्गा-जल**—गंगा के पावन जल; **सेइ प्रेमा**—वही प्रेम; **अमृतेर सिन्धु**—अमृत सिंधु; **निर्मल**—निर्मल; **से**—वह; **अनुरागे**—आकर्षण; **ना लुकाय**—छुपता नहीं; **अन्य**—अन्य; **दागे**—दाग; **शुक्ल-वस्त्रे**—सफेद वस्त्र पर; **ग्रैछे**—जैसे; **मसी-बिन्दु**—स्याही का बिन्दु।

### अनुवाद

**"कृष्ण-प्रेम गंगाजल के समान अत्यन्त शुद्ध है। ऐसा प्रेम अमृत का समुद्र है। कृष्ण के प्रति ऐसा शुद्ध अनुराग किसी दाग को नहीं छिपाता, जो सफेद वस्त्र पर स्याही के दाग के समान दिखता है।**

### तात्पर्य

कृष्ण का शुद्ध प्रेम बहुत बड़े सफेद वस्त्र की भाँति है। अनुराग का अभाव इस सफेद वस्त्र पर काले दाग की तरह है। जिस प्रकार काला धब्बा दूर से दिखता है, उसी तरह शुद्ध भगवत्प्रेम के स्तर पर इस प्रेम का अभाव सुस्पष्ट दिखता है।

শুদ্ধ-প্রেম-সুখ-সিন্ধু, পাই তার এক বিন্দু,
সেই বিন্দু জগত্ডুবায় ।

কহিবার যোগ্য নয়, তথাপি বাউলে কয়,
কহিলে বা কেবা পাতিয়ায় ॥ ৪৯॥

**शुद्ध-प्रेम-सुख-सिन्धु, पाइ तार एक बिन्दु,**
**सेइ बिन्दु जगत्डुबाय ।**
**कहिबार य़ोग्य नय, तथापि बाउले कय,**
**कहिले वा केबा पातियाय ॥ ४९ ॥**

**शुद्ध-प्रेम**—शुद्ध प्रेम; **सुख-सिन्धु**—सुख सागर; **पाइ**—पाकर; **तार**—उसकी; **एक**—एक; **बिन्दु**—बूँद; **सेइ बिन्दु**—वही बूँद; **जगत्**—जगत्; **डुबाय**—डुबो देता है; **कहिबार**—कहने के; **य़ोग्य नय**—योग्य नहीं है; **तथापि**—तथापि; **बाउले**—एक पागल; **कय**—बोलता है; **कहिले**—बोलने पर भी; **वा**—अथवा; **केबा पातियाय**—कौन विश्वास करता है।

**अनुवाद**

**"शुद्ध कृष्ण-प्रेम सुख के सागर जैसा है। यदि किसी को उसकी एक बूँद भी मिल जाये, तो उस बूँद में सारा संसार डूब सकता है। यद्यपि ऐसे भगवत्प्रेम को व्यक्त करना उचित नहीं है, तथापि एक उन्मत्त व्यक्ति उसे कह देगा। किन्तु उसके कहने पर भी उस पर कोई विश्वास नहीं करता।"**

এই মত দিনে দিনে, স্বরূপ-রামানন্দ-সনে,
নিজ-ভাব করেন বিদিত ।
বাহ্যে বিষ-জ্বালা হয়, ভিতরে আনন্দ-ময়,
কৃষ্ণ-প্রেমার অদ্ভুত চরিত ॥ ৫০॥

**एइ मत दिने दिने, स्वरूप-रामानन्द-सने,**
**निज-भाव करेन विदित ।**
**बाह्ये विष-ज्वाला हय, भितरे आनन्द-मय,**
**कृष्ण-प्रेमार अद्भुत चरित ॥ ५० ॥**

**एइ मत**—इस प्रकार; **दिने दिने**—प्रति दिन; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर; **रामानन्द**—रामानन्द राय; **सने**—के साथ; **निज**—अपने; **भाव**—भाव; **करेन**—करते; **विदित**—प्रकट; **बाह्ये**—बाहर से; **विष-ज्वाला हय**—विषैली वस्तुओं से दु:ख; **भितरे**—भीतर से; **आनन्द-मय**—दिव्य आनन्द; **कृष्ण-प्रेमार**—कृष्ण-प्रेम का; **अद्भुत**—अद्भुत; **चरित**—लक्षण।

अनुवाद

**इस प्रकार चैतन्य महाप्रभु नित्य प्रति इन भावों का आनन्द लेते और इन भावों को स्वरूप तथा रामानन्द के सामने प्रकट करते। ऊपर से तो यह दारुण कष्ट प्रतीत होता था, मानों महाप्रभु किसी विषैले प्रभाव से पीड़ित हों, किन्तु हृदय में वे आनन्द का अनुभव करते थे। कृष्ण के दिव्य प्रेम का यही गुण है।**

এই প্রেমা-আস্বাদন, তপ্ত-ইক্ষু-চর্বণ,
মুখ জ্বলে, না যায় ত্যজন ।
সেই প্রেমা যাঁর মনে, তার বিক্রম সেই জানে,
বিষামৃতে একত্র মিলন ॥৫১॥

**एइ प्रेमा-आस्वादन, तप्त-इक्षु-चर्वण,**
**मुख ज्वले, ना ग्राय त्यजन ।**
**सेइ प्रेमा ग्याँर मने, तार विक्रम सेइ जाने,**
**विषामृते एकत्र मिलन ॥५१॥**

**एइ**—यह; **प्रेमा**—कृष्ण-प्रेम; **आस्वादन**—आस्वादन; **तप्त**—गर्म; **इक्षु-चर्वण**—गन्ना चूसना; **मुख ज्वले**—मुख जलता है; **ना ग्राय त्यजन**—तथापि छोड़ा न जाये; **सेइ**—वह; **प्रेमा**—भगवत् प्रेम; **ग्याँर मने**—किसी के मन में; **तार**—उसकी; **विक्रम**—शक्ति; **सेइ जाने**—वही जानता है; **विष-अमृते**—विष और अमृत; **एकत्र**—एक साथ; **मिलन**—मिलन।

अनुवाद

**जो ऐसे भगवत्-प्रेम का आस्वादन करता है, वह इसकी तुलना गर्म गन्ने (ईख) से करता है। गर्म गन्ने को यदि कोई चबाता है, तो उसका मुख जलता है, फिर भी वह उसे छोड़ नहीं सकता। इसी प्रकार किसी में यदि लेश-मात्र भी भगवत्प्रेम हो, तो वह इसके सशक्त प्रभाव का अनुभव कर सकता है। इसकी तुलना अमृत और विष के मिश्रण से ही की जा सकती है।**

পীড়াভির্নব-কাল-কূট-কটুতা-গর্বস্য নির্বাসনো
নিস্যন্দেন মুদাং সুধা-মধুরিমাহঙ্কার-সঙ্কোচনঃ ।

প্রেমা সুন্দরি নন্দ-নন্দন-পরো জাগর্তি যস্যান্তরে
জ্ঞায়ন্তে স্ফুটমস্য বক্র-মধুরাস্তেনৈব বিক্রান্তয়ঃ ॥৫২॥

पीड़ाभिर्नव-काल-कूट-कटुता-गर्वस्य निर्वासनो
निस्यन्देन मुदां सुधा-मधुरिमाहङ्कार-सङ्कोचनः ।
प्रेमा सुन्दरि नन्द-नन्दन-परो जागर्ति ग्रस्यान्तरे
ज्ञायन्ते स्फुटमस्य वक्र-मधुरास्तेनैव विक्रान्तयः ॥५२॥

**पीड़ाभिः**—दु:खों से; **नव**—नया; **काल-कूट**—विष का; **कटुता**—कड़वाहट; **गर्वस्य**—गर्व की; **निर्वासनः**—निर्वासन; **निस्यन्देन**—बहाने से; **मुदाम्**—प्रसन्नता; **सुधा**—अमृत की; **मधुरिमा**—मधुरता की; **अहङ्कार**—अहंकार; **सङ्कोचनः**—कम करने से; **प्रेमा**—प्रेम; **सुन्दरि**—सुन्दर मित्र; **नन्द-नन्दन-परः**—नन्द महाराज के पुत्र पर स्थिर; **जागर्ति**—विकसित होता है; **ग्रस्य**—जिसके; **अन्तरे**—हृदय में; **ज्ञायन्ते**—दिखती है; **स्फुटम्**—स्पष्ट; **अस्य**—उसका; **वक्र**—कपटी; **मधुराः**—और मधुर; **तेन**—उससे; **एव**—अकेले; **विक्रान्तयः**—प्रभाव।

### अनुवाद

**चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "'हे सुन्दरियों, यदि कोई भगवत्प्रेम अर्थात् नन्द महाराज के पुत्र, कृष्ण के प्रति प्रेम जाग्रत कर लेता है, तो उसके हृदय में इस प्रेम के कड़वे तथा मीठे सभी प्रभाव प्रकट होंगे। ऐसा भगवत्प्रेम दो प्रकार से कार्य करता है। भगवत्प्रेम का विषैला प्रभाव सर्प के ताजे तथा तीव्र विष को भी पराजित करनेवाला है। तथापि उसी के साथ ऐसा दिव्य आनन्द भी मिलता है, जो अमृत के अहंकार को चूर करके उसके मान को घटाता है। दूसरे शब्दों में, कृष्ण-प्रेम इतना शक्तिशाली है कि वह सर्प के विषैले प्रभाव के साथ-साथ सिर पर गिरने वाले अमृत से प्राप्त सुख को भी परास्त करने वाला होता है। इसका अनुभव दो रूपों में किया जाता है—एक साथ विषैला तथा अमृततुल्य।'"**

### तात्पर्य

यह श्लोक श्रील रूप गोस्वामी-कृत *विदग्ध माधव* (२.१८) में पौर्णमासी के द्वारा नान्दीमुखी से कहा गया है।

যে কালে দেখে জগন্নাথ-শ্রীরাম-সুভদ্রা-সাথ,
তবে জানে—আইলাম কুরুক্ষেত্র ।
সফল হৈল জীবন, দেখিলুঁ পদ্ম-লোচন,
জুড়াইল তনু-মন-নেত্র ॥৫৩॥

**ये काले देखे जगन्नाथ-श्रीराम-सुभद्रा-साथ,**
**तबे जाने—आइलाम कुरुक्षेत्र ।**
**सफल हैल जीवन, देखिलुँ पद्म-लोचन,**
**जुड़ाइल तनु-मन-नेत्र ॥५३॥**

**ये काले**—जिस समय; **देखे**—वे देखते हैं; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **श्री-राम**—बलराम; **सुभद्रा**—सुभद्रा; **साथ**—के साथ; **तबे**—उस समय; **जाने**—जानते हैं; **आइलाम**—मैं आ गया हूँ; **कुरुक्षेत्र**—कुरुक्षेत्र के तीर्थ-स्थान पर; **स-फल**—सफल; **हैल**—हो गया; **जीवन**—जीवन; **देखिलुँ**—मैंने देखा है; **पद्म-लोचन**—कमलनयन; **जुड़ाइल**—शान्त; **तनु**—शरीर; **मन**—मन; **नेत्र**—नेत्र।

अनुवाद

**जब श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथजी को श्री बलराम तथा सुभद्रा के साथ देखते, तो वे तुरन्त सोचने लगते कि वे कुरुक्षेत्र पहुँच गये हैं, जहाँ वे सब आये थे। वे अपने जीवन को कृतार्थ समझते, क्योंकि उन्होंने उन कमलनयन के दर्शन किये हैं, जो अपने दर्शन से तन, मन तथा नेत्रों को शान्त करने वाले हैं।**

গরুড়ের সন্নিধানে, রহি' করে দরশনে,
সে আনন্দের কি কহিব ব'লে ।
গরুড়-স্তম্ভের তলে, আছে এক নিম্ন খালে,
সে খাল ভরিল অশ্রু-জলে ॥৫৪॥

**गरुड़ेर सन्निधाने, रहि' करे दरशने,**
**से आनन्देर कि कहिब ब'ले ।**
**गरुड़-स्तम्भेर तले, आछे एक निम्न खाले,**
**से खाल भरिल अश्रु-जले ॥५४॥**

**गरुड़ेर**—गरुड़; **सन्निधाने**—निकट; **रहि'**—रहकर; **करे**—करते; **दरशने**—दर्शन; **से आनन्देर**—उस आनन्द का; **कि**—क्या; **कहिब**—कहूँ; **ब'ले**—बलपूर्वक; **गरुड़**—गरुड़

की मूर्ति; **स्तम्भेर**—स्तम्भ के; **तले**—नीचे; **आछे**—है; **एक**—एक; **निम्न**—नीची; **खाले**—नाली; **से खाल**—वह नाली; **भरिल**—भर जाती; **अश्रु-जले**—अश्रु जल से।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु गरुड़-स्तम्भ के पास खड़े रहकर भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करते थे। भला उस प्रेम के बल के विषय में क्या कहा जा सकता है? उस गरुड़-स्तम्भ के नीचे भूमि पर एक गहरी नाली थी, जो उनके अश्रु-जल से भर जाती थी।**

तात्पर्य

जगन्नाथ मन्दिर के सामने एक स्तम्भ पर गरुड़ की प्रतिमा है। यह गरुड़-स्तम्भ कहलाता है। उसी स्तम्भ के नीचे एक नाली है, जो महाप्रभु के अश्रुओं से भर गयी थी।

তাহাঁ হৈতে ঘরে আসি', মাটীর উপরে বসি',
নখে করে পৃথিবী লিখন ।
হা-হা কাহাঁ বৃন্দাবন, কাহাঁ গোপেন্দ্র-নন্দন,
কাহাঁ সেই বংশী-বদন ॥৫৫॥

**ताहाँ हैते घरे आसि', माटीर उपरे वसि',**
**नखे करे पृथिवी लिखन ।**
**हा-हा काहाँ वृन्दावन, काहाँ गोपेन्द्र-नन्दन,**
**काहाँ सेइ वंशी-वदन ॥५५॥**

**ताहाँ हैते**—वहाँ से; **घरे आसि'**—घर लौटकर; **माटीर**—धरती; **उपरे**—ऊपर; **वसि'**—बैठकर; **नखे**—नाखूनों से; **करे**—करते; **पृथिवी**—धरती की सतह पर; **लिखन**—कुरेदना; **हा-हा**—हाय; **काहाँ**—कहाँ है; **वृन्दावन**—वृन्दावन; **काहाँ**—कहाँ; **गोप-इन्द्र-नन्दन**—गोपों के राजा का पुत्र; **काहाँ**—कहाँ; **सेइ**—वह; **वंशी-वदन**—वंशी वादक।

अनुवाद

**जगन्नाथ-मन्दिर से घर लौटकर श्री चैतन्य महाप्रभु भूमि पर बैठते और अपने नाखूनों से उसे कुरेदते। ऐसे अवसर पर वे अत्यन्त दुःखी होकर प्रलाप करते, "हाय, वृन्दावन कहाँ है? गोपेन्द्रनन्दन कृष्ण कहाँ हैं? वह वंशी बजाने वाला कहाँ है?"**

কাহাঁ সে ত্রি-ভঙ্গ-ঠাম, কাহাঁ সেই বেণু-গান,
কাহাঁ সেই যমুনা-পুলিন ।
কাহাঁ সে রাস-বিলাস, কাহাঁ নৃত্য-গীত-হাস,
কাহাঁ প্রভু মদন-মোহন ॥৫৬॥

**काहाँ से त्रि-भङ्ग-ठाम, काहाँ सेइ वेणु-गान,**
**काहाँ सेइ ग्रमुना-पुलिन ।**
**काहाँ से रास-विलास, काहाँ नृत्य-गीत-हास,**
**काहाँ प्रभु मदन-मोहन ॥५६॥**

**काहाँ**—कहाँ; **से**—वे; **त्रि-भङ्ग-ठाम**—तीन जगहों से टेढ़े शरीर वाला; **काहाँ**—कहाँ; **सेइ**—वह; **वेणु-गान**—बांसुरी का मधुर गीत; **काहाँ**—कहाँ; **सेइ**—वह; **ग्रमुना-पुलिन**—यमुना नदी का तट; **काहाँ**—कहाँ; **से**—वह; **रास-विलास**—रास नृत्य; **काहाँ**—कहाँ; **नृत्य-गीत-हास**—नृत्य, संगीत तथा हास्य; **काहाँ**—कहाँ; **प्रभु**—मेरे प्रभु; **मदन-मोहन**—कामदेव को मोहने वाले।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु यह कहकर विलाप किया करते, "त्रिभंगी कृष्ण कहाँ हैं? कहाँ है उनकी बाँसुरी का मधुर गान? कहाँ है यमुना का तट? कहाँ है रास-नृत्य? कहाँ है वह नृत्य, गीत और हँसी? कहाँ है मेरे नाथ मदनमोहन, जो कामदेव को मोहत करने वाले हैं?"**

উঠিল নানা ভাবাবেগ, মনে হৈল উদ্বেগ,
ক্ষণ-মাত্র নারে গোঙাইতে ।
প্রবল বিরহানলে, ধৈর্য হৈল টলমলে,
নানা শ্লোক লাগিলা পড়িতে ॥৫৭॥

**उठिल नाना भावावेग, मने हैल उद्वेग,**
**क्षण-मात्र नारे गोङाइते ।**
**प्रबल विरहानले, धैर्य्य हैल टलमले,**
**नाना श्लोक लागिला पड़िते ॥५७॥**

**उठिल**—उठे; **नाना**—नाना; **भाव-आवेग**—भावावेश; **मने**—मन में; **हैल**—था; **उद्वेग**—चिन्ता; **क्षण-मात्र**—क्षण मात्र भी; **नारे**—अक्षम; **गोङाइते**—बिताना; **प्रबल**—प्रबल;

**विरह-अनले**—विरह अग्नि में; **धैर्य**—धैर्य; **हैल**—हो गया; **टलमले**—विचलित; **नाना**—नाना; **श्लोक**—श्लोक; **लागिला**—आरम्भ किया; **पड़िते**—पढ़ना।

### अनुवाद

**इस प्रकार विविध भावावेग उत्पन्न होते और चैतन्य महाप्रभु का मन उद्विग्न हो उठता। वे एक क्षण भी निश्चिन्त नहीं रह पाते। इस तरह विरह की प्रबल भावनाओं के कारण उनका धैर्य छूटने लगता और वे विभिन्न श्लोकों का उच्चारण करने लगते।**

অমূন্যধন্যানি দিনান্তরাণি
হরে ত্বদালোকনমন্তরেণ ।
অনাথ-বন্ধো করুণৈক-সিন্ধো
হা হন্ত হা হন্ত কথং নয়ামি ॥৫৮॥

**अमून्यधन्यानि दिनान्तराणि**
**हरे त्वदालोकनमन्तरेण ।**
**अनाथ-बन्धो करुणैक-सिन्धो**
**हा हन्त हा हन्त कथं नयामि ॥५८॥**

**अमूनि**—वे सब; **अधन्यानि**—अशुभ; **दिन-अन्तराणि**—अन्य दिन; **हरे**—हे मेरे प्रभु; **त्वत्**—आपका; **आलोकनम्**—देखकर; **अन्तरेण**—बिना; **अनाथ-बन्धो**—हे अनाथ बन्धु; **करुणा-एक-सिन्धो**—हे कृपा के एकमात्र सागर; **हा हन्त**—हाय; **हा हन्त**—हाय; **कथम्**—कैसे; **नयामि**—व्यतीत करूँगा।

### अनुवाद

**"'हे प्रभु, हे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्, हे अनाथों के मित्र! आप एकमात्र कृपा के सागर हैं! चूँकि मैं आपसे मिल नहीं पाया, इसलिए मेरे अशुभ दिन तथा रातें असह्य हो गये हैं। मैं समझ नहीं पा रहा कि मैं अपना समय किस तरह व्यतीत करूँ?'**

### तात्पर्य

यह श्लोक बिल्वमंगल ठाकुर-कृत *कृष्णकर्णामृत* (४१) से लिया गया है।

তোমার দর্শন-বিনে, অধন্য এ রাত্রি-দিনে,
এই কাল না যায় কাটন ।
তুমি অনাথের বন্ধু, অপার করুণা-সিন্ধু,
কৃপা করি' দেহ দরশন ॥৫৯॥

**तोमार दर्शन-विने, अधन्य ए रात्रि-दिने,**
**एइ काल ना ग्राय काटन ।**
**तुमि अनाथेर बन्धु, अपार करुणा-सिन्धु,**
**कृपा करि' देह दरशन ॥५९॥**

**तोमार**—आपके; **दर्शन**—दर्शन; **विने**—बिना; **अधन्य**—अशुभ; **ए**—यह; **रात्रि-दिने**—रात दिन; **एइ काल**—इस समय; **ना ग्राय**—नहीं आता; **काटन**—कट; **तुमि**—आप; **अनाथेर बन्धु**—अनाथों के बन्धु; **अपार**—असीम; **करुणा-सिन्धु**—करुणा सागर; **कृपा करि'**—कृपा करके; **देह**—दो; **दरशन**—दर्शन।

अनुवाद

**"आपके दर्शन के अभाव में ये अशुभ दिन तथा रातें कट नहीं रही हैं। समझ में नहीं आता कि यह समय कैसे काटा जाये। किन्तु आप अनाथों के मित्र और करुणा के सागर हैं। कृपा करके अपना दर्शन दें, क्योंकि मैं बहुत संदिग्ध अवस्था में हूँ।"**

উঠিল ভাব-চাপল, মন হইল চঞ্চল,
ভাবের গতি বুঝন না যায় ।
অদর্শনে পোড়ে মন, কেমনে পাব দরশন,
কৃষ্ণ-ঠাঞি পুছেন উপায় ॥৬০॥

**उठिल भाव-चापल, मन हइल चञ्चल,**
**भावेर गति बुझन ना ग्राय ।**
**अदर्शने पोड़े मन, केमने पाब दरशन,**
**कृष्ण-ठाञि पुछेन उपाय ॥६०॥**

**उठिल**—उठा; **भाव-चापल**—भावावेश का अस्थिर भाव; **मन**—मन; **हइल**—हो गया; **चञ्चल**—चंचल; **भावेर**—भावावेश की; **गति**—गति; **बुझन**—समझना; **ना ग्राय**—असम्भव; **अदर्शने**—देखे बिना; **पोड़े**—जलता है; **मन**—मन; **केमने**—कैसे; **पाब**—मैं पाऊँगा; **दरशन**—दर्शन; **कृष्ण-ठाञि**—कृष्ण से; **पुछेन**—पूछना; **उपाय**—साधन।

### अनुवाद

**इस प्रकार महाप्रभु भावावेश के कारण अस्थिर हो गये और उनका मन उत्तेजित हो गया। कोई यह समझ नहीं पा रहा था कि यह भाव किधर ले जायेगा। पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण से न मिल पाने के कारण श्री चैतन्य महाप्रभु का मन जलने लगा। वे भगवान् कृष्ण से उन तक पहुँचने का उपाय पूछने लगे।**

ত্বচ্ছৈশবং ত্রি-ভুবনাদ্ভুতমিত্যবেহি
মচ্চাপলং চ তব বা মম বাধিগম্যম্ ।
তৎকিং করোমি বিরলং মুরলী-বিলাসি
মুগ্ধং মুখাম্বুজমুদীক্ষিতুমীক্ষণাভ্যাম্ ॥৬১॥

**त्वच्छैशवं त्रि-भुवनाद्भुतमित्यवेहि**
**मच्चापलं च तव वा मम वाधिगम्यम् ।**
**तत्किं करोमि विरलं मुरली-विलासि**
**मुग्धं मुखाम्बुजमुदीक्षितुमीक्षणाभ्याम् ॥ ६१ ॥**

**त्वत्**—आपकी; **शैशवम्**—शिशु अवस्था; **त्रि-भुवन**—तीनों भुवनों में; **अद्भुतम्**—अद्भुत; **इति**—इस प्रकार; **अवेहि**—जानते हैं; **मत्-चापलम्**—मेरी चंचलता; **च**—और; **तव**—आपका; **वा**—अथवा; **मम**—मेरा; **वा**—अथवा; **अधिगम्यम्**—जानने योग्य; **तत्**—वह; **किम्**—क्या; **करोमि**—मैं करूँ; **विरलम्**—अकेले में; **मुरली-विलासि**—हे मुरली वादक; **मुग्धम्**—आकर्षक; **मुख-अम्बुजम्**—मुख कमल; **उदीक्षितुम्**—अच्छी प्रकार से देखना; **ईक्षणाभ्याम्**—नेत्रों से।

### अनुवाद

**"'हे कृष्ण, हे वंशीवादक, आपके बाल्यकाल की माधुरी तीनों लोकों में अद्भुत है। आप मेरी चपलता को जानते हैं और मैं आपकी। इसके विषय में अन्य कोई नहीं जानता। मैं आपके सुन्दर आकर्षक मुखमण्डल को एकान्त में देखना चाहता हूँ, किन्तु यह कैसे सम्भव होगा?'**

### तात्पर्य

यह श्लोक बिल्वमंगल ठाकुर कृत *कृष्णकर्णामृत* (३२) से उद्धृत है।

তোমার মাধুরী-বল, তাতে মোর চাপল,
এই দুই, তুমি আমি জানি ।
কাহাঁ করোঁ কাহাঁ যাঁ, কাহাঁ গেলে তোমা পাঁ,
তাহা মোরে কহ ত' আপনি ॥৬২॥

**तोमार माधुरी-बल, ताते मोर चापल,**
**एइ दुइ, तुमि आमि जानि ।**
**काहाँ करों काहाँ ग्राँ, काहाँ गेले तोमा पाँ,**
**ताहा मोरे कह त' आपनि ॥ ६२ ॥**

**तोमार**—आपका; **माधुरी-बल**—मधुरता की शक्ति; **ताते**—उसमें; **मोर**—मेरी; **चापल**—अस्थिरता; **एइ**—ये; **दुइ**—दो; **तुमि**—आप; **आमि**—मैं; **जानि**—जानते हैं; **काहाँ**—कहाँ; **करों**—मैं करुँ; **काहाँ**—कहाँ; **ग्राँ**—मैं जाऊँ; **काहाँ**—कहाँ; **गेले**—जाने से; **तोमा**—आपको; **पाँ**—मैं पा सकता हूँ; **ताहा**—वह; **मोरे**—मुझे; **कह**—कृपया कहो; **त' आपनि**—आप।

अनुवाद

**"हे प्रिय कृष्ण! आपके सुन्दर रूप की शक्ति को केवल मैं या आप ही जानते हैं और मेरी अस्थिरता ( चपलता ) का कारण भी वही है। अब मेरी स्थिति ऐसी है कि समझ में नहीं आता क्या करूँ और कहाँ जाऊँ। मैं आपको कहाँ पा सकता हूँ। मैं तो आपसे ही मार्गदर्शन के लिए कह रहा हूँ।"**

নানা-ভাবের প্রাবল্য, হৈল সন্ধি-শাবল্য,
ভাবে-ভাবে হৈল মহা-রণ ।
ঔৎসুক্য, চাপল্য, দৈন্য, রোষামর্ষ আদি সৈন্য,
প্রেমোন্মাদ—সবার কারণ ॥৬৩॥

**नाना-भावेर प्राबल्य, हैल सन्धि-शाबल्य,**
**भावे-भावे हैल महा-रण ।**
**औत्सुक्य, चापल्य, दैन्य, रोषामर्ष आदि सैन्य,**
**प्रेमोन्माद—सबार कारण ॥ ६३ ॥**

**नाना**—नाना; **भावेर**—भावों का; **प्राबल्य**—बल; **हैल**—हुआ; **सन्धि**—मिलन; **शाबल्य**—विरोध; **भावे-भावे**—भावों के मध्य; **हैल**—हुआ; **महा-रण**—महान् युद्ध;

**औत्सुक्य**—उत्सुकता; **चापल्य**—अस्थिरता; **दैन्य**—दीनता; **रोष-अमर्ष**—क्रोध एवं अधीरता; **आदि**—ये सारे; **सैन्य**—सैनिक; **प्रेम-उन्माद**—प्रेम का पागलपन; **सबार**—सबका; **कारण**—कारण।

### अनुवाद

**विभिन्न प्रकार के भावों के कारण मन में विरोधी दशाएँ उत्पन्न होती, जिससे विभिन्न प्रकार के भावों में डटकर युद्ध होता था। चिन्ता, चपलता, दीनता, क्रोध तथा अधीरता सैनिकों की भाँति युद्ध करते और इसका कारण था भगवत्-प्रेम का उन्माद।**

### तात्पर्य

*भक्तिरसामृत-सिन्धु* में बतलाया गया है कि जब विभिन्न कारणों से एक-से भावों का मिलन होता है, तो उन्हें *स्वरूप-सन्धि* कहा जाता है। जब विरोधी तत्त्व मिलते हैं, तो चाहे वे एक कारण से या विभिन्न कारणों से क्यों न उदय हों, उनका संगम *भिन्न-रूप-सन्धि* कहलाता है। विभिन्न भावों—यथा भय और सुख, शोक तथा सुख—का एकसाथ मिलना *सन्धि* कहलाता है। गर्व, उदासी, धैर्य तथा उत्सुकता, दैन्य, स्मृति, संशय, अपमान जनित अधीरता, भय, निराशा आदि भाव-लक्षणों को *शाबल्य* कहते हैं। इन भावों के मिलने से उत्पन्न घर्षण ही *शाबल्य* है। इसी प्रकार जब किसी वस्तु को देखने की इच्छा बलवती होती है या जब वांछित वस्तु को देखने में विलम्ब सहा नहीं जा सकता, तो यह असमर्थता *औत्सुक्य* या उत्सुकता कहलाती है। यदि किसी में ऐसी उत्सुकता रहती है, तो उसका मुँह सूख जाता है और वह बेचैन हो उठता है। व्यक्ति पूर्ण रूप से चिन्तित हो जाता है और उसमें कठिनाई से साँस लेने तथा अधीरता के लक्षण दिखाई देते हैं। इसी प्रकार प्रबल अनुरक्ति के कारण उत्पन्न हृदय का हल्कापन तथा मन की प्रबल उत्तेजना *चापल्य* कहलाता है। असमंजसता, शब्दों का दुरुपयोग तथा चिन्तारहित हठीले कार्यकलाप देखे जाते हैं। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति विपक्षी पर अत्यधिक क्रुद्ध होता है, तब अपराधपूर्ण तथा कुत्सित भाषा का प्रयोग होता है। तब वह क्रोध *रोष* कहलाता है। जब कोई अपमानित किये जाने या डाँट खाने से अधीर हो जाता है, तो मन की इस दशा को *अमर्ष* कहते हैं। ऐसी मनोदशा में शरीर में पसीना आ

जाता है, सिरदर्द होने लगता है, शरीर का रंग उतर जाता है (विवर्णता), व्यक्ति को चिन्ता होती है तथा वह कोई उपाय ढूँढ निकालने के लिए प्रेरित होता है। आक्रोश, घृणा तथा प्रताड़ना ये प्रत्यक्ष लक्षण हैं।

মত্ত-গজ ভাব-গণ, প্রভুর দেহ—ইক্ষু-বন,
গজ-যুদ্ধে বনের দলন ।
প্রভুর হৈল দিব্যোন্মাদ, তনু-মনের অবসাদ,
ভাবাবেশে করে সম্বোধন ॥৬৪॥

**मत्त-गज भाव-गण, प्रभुर देह—इक्षु-वन,**
**गज-युद्धे वनेर दलन ।**
**प्रभुर हैल दिव्योन्माद, तनु-मनेर अवसाद,**
**भावावेशे करे सम्बोधन ॥६४॥**

**मत्त-गज**—मत्त हाथी; **भाव-गण**—भाव के लक्षण; **प्रभुर**—महाप्रभु के; **देह**—शरीर; **इक्षु-वन**—गन्ने का खेत; **गज-युद्धे**—हाथियों की लड़ाई; **वनेर**—जंगल में; **दलन**—रौंदना; **प्रभुर**—महाप्रभु का; **हैल**—था; **दिव्य-उन्माद**—दिव्य उन्माद; **तनु-मनेर**—मन एवं शरीर का; **अवसाद**—शोक; **भाव-आवेशे**—भावावेश में; **करे**—करते; **सम्बोधन**—सम्बोधन।

**अनुवाद**

**महाप्रभु का शरीर उस गन्ने के खेत के समान था, जिसमें भावरूपी उन्मत्त हाथी प्रवेश कर गये हों। इन हाथियों में युद्ध होने से ईख का सारा खेत नष्ट हो गया। इस तरह महाप्रभु के शरीर में दिव्य उन्माद का उदय हुआ और उन्हें मन तथा शरीर में निराशा का अनुभव होने लगा। ऐसी भाव-दशा में वे इस प्रकार बोलने लगे।**

হে দেব হে দয়িত হে ভুবনৈক-বন্ধো
হে কৃষ্ণ হে চপল হে করুণৈক-সিন্ধো ।
হে নাথ হে রমণ হে নয়নাভিরাম
হা হা কদা নু ভবিতাসি পদং দৃশোর্মে ॥৬৫॥

**हे देव हे दयित हे भुवनैक-बन्धो**
**हे कृष्ण हे चपल हे करुणैक-सिन्धो ।**

**हे नाथ हे रमण हे नयनाभिराम**
**हा हा कदा नु भवितासि पदं दृशोर्मे ॥ ६५ ॥**

**हे देव**—हे देव; **हे दयित**—हे प्रियतम; **हे भुवन-एक-बन्धो**—हे जगत् के एकमात्र मित्र; **हे कृष्ण**—हे भगवान् कृष्ण; **हे चपल**—हे चंचल; **हे करुणा-एक-सिन्धो**—हे कृपा के एकमात्र सागर; **हे नाथ**—हे मेरे प्रभु; **हे रमण**—हे मेरे भोक्ता; **हे नयन-अभिराम**—हे मेरे नेत्रों को सर्वाधिक सुन्दर लगनेवाले; **हा हा**—हाय; **कदा**—कब; **नु**—निश्चित रूप से; **भविता असि**—आप होंगे; **पदम्**—निवासस्थान; **दृशोः मे**—मेरी दृष्टि के।

**अनुवाद**

**"'हे प्रभु! हे प्रियतम! हे ब्रह्माण्ड के एकमात्र सखा! हे कृष्ण, हे चपल, हे करुणासिन्धु! हे स्वामी, हे मेरे भोक्ता, हे मेरे नयनाभिराम! हाय, आप मुझे अब पुनः कब दर्शन देंगे?'"**

**तात्पर्य**

यह *कृष्णकर्णामृत* का ४०वाँ श्लोक है।

উন্মাদের লক্ষণ, করায় কৃষ্ণ-স্ফুরণ,
ভাবাবেশে উঠে প্রণয় মান ।
সোল্লুণ্ঠ-বচন-রীতি, মান, গর্ব, ব্যাজ-স্তুতি,
কভু নিন্দা, কভু বা সম্মান ॥৬৬॥

**उन्मादेर लक्षण, कराय कृष्ण-स्फुरण,**
**भावावेशे उठे प्रणय मान ।**
**सोल्लुण्ठ-वचन-रीति, मान, गर्व, व्याज-स्तुति,**
**कभु निन्दा, कभु वा सम्मान ॥ ६६ ॥**

**उन्मादेर लक्षण**—उन्माद के लक्षण; **कराय**—करवाते हैं; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **स्फुरण**—स्फूर्ति; **भाव-आवेशे**—भावावेश में; **उठे**—उठता है; **प्रणय**—प्रेम; **मान**—तिरस्कार; **सोल्लुण्ठ-वचन**—मधुर शब्दों द्वारा तिरस्कार; **रीति**—रीति; **मान**—मान; **गर्व**—अभिमान; **व्याज-स्तुति**—अप्रत्यक्ष स्तुति; **कभु**—कभी-कभी; **निन्दा**—निन्दा; **कभु**—कभी-कभी; **वा**—अथवा; **सम्मान**—सम्मान।

**अनुवाद**

**उन्माद के लक्षणों से कृष्ण के स्मरण को प्रोत्साहन मिलता था। भावावेश में प्रेम (प्रणय), मान, मीठे वचनों द्वारा तिरस्कार, गर्व, आदर**

**तथा अप्रत्यक्ष स्तुति जाग्रत होते थे। इस प्रकार कभी कृष्ण की निन्दा होती और कभी उनका सम्मान होता।**

**तात्पर्य**

*भक्तिरसामृत-सिन्धु* में *उन्माद* शब्द की व्याख्या विरह जनित अत्यधिक हर्ष, दुर्भाग्य तथा हृदय की मोहग्रस्तता के रूप में की गई है। *उन्माद* के लक्षण हैं—उन्मत्त की तरह हँसना, नृत्य करना, गाना, व्यर्थ के कार्य करना, प्रलाप करना, दौड़ना, चिल्लाना तथा कभी-कभी विरोधी व्यवहार करना। *प्रणय* की व्याख्या इस प्रकार की गई है—जब प्रत्यक्ष सम्मान मिलने की सम्भावना हो, किन्तु उसे टाला जाता है, तो वह प्रेम *प्रणय* कहलाता है। श्रील रूप गोस्वामी ने अपने *उज्ज्वल-नीलमणि* में *मान* शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है—जब प्रेमी हार्दिक प्रेम-भरे शब्दों के आदान-प्रदान से अद्‌भुत मिठास का अनुभव करता है, किन्तु चालाकी द्वारा अपनी भावनाओं को छिपाना चाहता है, तो *मान* का अनुभव होता है।

তুমি দেব—ক্রীড়া-রত, ভুবনের নারী যত,
তাহে কর অভীষ্ট ক্রীড়ন ।
তুমি মোর দয়িত, মোতে বৈসে তোমার চিত,
মোর ভাগ্যে কৈলে আগমন ॥৬৭॥

**तुमि देव—क्रीड़ा-रत, भुवनेर नारी य़त,**
**ताहे कर अभीष्ट क्रीड़न ।**
**तुमि मोर दयित, मोते वैसे तोमार चित,**
**मोर भाग्ये कैले आगमन ॥ ६७॥**

**तुमि**—आप; **देव**—परम भगवान्; **क्रीड़ा-रत**—अपनी लीलाओं में रत; **भुवनेर**—सभी ब्रह्माण्डों की; **नारी**—नारियाँ; **य़त**—सभी; **ताहे**—उन लीलाओं में; **कर**—आप करते हैं; **अभीष्ट**—इच्छानुसार; **क्रीड़न**—क्रीड़ा; **तुमि**—आप; **मोर**—मेरा; **दयित**—कृपालु; **मोते**—मुझ पर; **वैसे**—लगाओ; **तोमार**—आपका; **चित**—मन; **मोर**—मेरे; **भाग्ये**—सौभाग्य से; **कैले**—आपने किया है; **आगमन**—आगमन।

**अनुवाद**

**राधारानी के मनोभाव में श्री चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण को इस प्रकार**

**सम्बोधित किया : "हे प्रभु, आप अपनी लीलाओं में रत हैं और आप अपनी इच्छानुसार ब्रह्माण्ड की सारी स्त्रियों का उपभोग करते हैं। आप मुझ पर अत्यन्त कृपालु हैं। आप अपना ध्यान मेरी ओर दें, क्योंकि भाग्यवश आप मेरे समक्ष प्रकट हुए हैं।**

ভুবনের নারী-গণ, সবা' কর আকর্ষণ,
তাহাঁ কর সব সমাধান ।
তুমি কৃষ্ণ—চিত্ত-হর, ঐছে কোন পামর,
তোমারে বা কেবা করে মান ॥৬৮॥

**भुवनेर नारी-गण, सबा' कर आकर्षण,**
**ताहाँ कर सब समाधान ।**
**तुमि कृष्ण—चित्त-हर, ऐछे कोन पामर,**
**तोमारे वा केबा करे मान ॥ ६८ ॥**

**भुवनेर**—सभी ब्रह्माण्डों की; **नारी-गण**—नारियाँ; **सबा'**—सब; **कर**—आप करते हैं; **आकर्षण**—आकर्षण; **ताहाँ**—वहाँ; **कर**—आपने किया; **सब**—सब; **समाधान**—समाधान; **तुमि**—आप; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **चित्त-हर**—चित्त हरते हो; **ऐछे**—उस प्रकार; **कोन**—कोई; **पामर**—विलासी; **तोमारे**—आप; **वा**—अथवा; **केबा**—कौन; **करे**—करता है; **मान**—सम्मान।

अनुवाद

**"हे प्रभु, आप ब्रह्माण्ड की सारी स्त्रियों को आकृष्ट करते हैं और जब वे आती हैं, तब आप उन सबका समाधान करते हैं। आप भगवान् कृष्ण हैं और सबके चित्त को हरने वाले हैं, किन्तु अन्ततः आप हैं लंपट ( विलासी ) ही। भला आपका सम्मान कौन करेगा?**

তোমার চপল-মতি, একত্র না হয় স্থিতি,
তা'তে তোমার নাহি কিছু দোষ ।
তুমি ত' করুণা-সিন্ধু, আমার পরাণ-বন্ধু,
তোমায় নাহি মোর কভু রোষ ॥৬৯॥

**तोमार चपल-मति, एकत्र ना हय स्थिति,**
**ता'ते तोमार नाहि किछु दोष ।**
**तुमि त' करुणा-सिन्धु, आमार पराण-बन्धु,**
**तोमाय नाहि मोर कभु रोष ॥ ६९ ॥**

**तोमार**—आपका; **चपल-मति**—चपल मन; **एकत्र**—एक स्थान पर; **ना**—कभी नहीं; **हय**—है; **स्थिति**—स्थित; **ता'ते**—उसमें; **तोमार**—आपका; **नाहि**—नहीं है; **किछु**—कोई; **दोष**—दोष; **तुमि**—आप; **त'**—निश्चय ही; **करुणा-सिन्धु**—कृपा सिंधु; **आमार**—मेरा; **पराण-बन्धु**—प्राण बन्धु; **तोमाय**—आपके प्रति; **नाहि**—नहीं है; **मोर**—मेरा; **कभु**—किसी समय; **रोष**—क्रोध।

## अनुवाद

**"हे प्रिय कृष्ण, आपका मन सदैव चंचल रहता है। आप एक स्थान पर नहीं रह सकते, किन्तु इसमें आपका दोष नहीं है। आप तो करुणा के सागर हैं, मेरे प्राण-प्रिय हैं। अतएव आपसे रुष्ट होने का कोई कारण नहीं है।**

তুমি নাথ—ব্রজ-প্রাণ, ব্রজের কর পরিত্রাণ,
বহু কার্যে নাহি অবকাশ ।
তুমি আমার রমণ, সুখ দিতে আগমন,
এ তোমার বৈদগ্ধ্য-বিলাস ॥ ৭০ ॥

**तुमि नाथ—व्रज-प्राण, व्रजेर कर परित्राण,**
**बहु कार्य्ये नाहि अवकाश ।**
**तुमि आमार रमण, सुख दिते आगमन,**
**ए तोमार वैदग्ध्य-विलास ॥ ७० ॥**

**तुमि**—आप; **नाथ**—नाथ, स्वामी; **व्रज-प्राण**—व्रजभूमि (वृन्दावन) के प्राण; **व्रजेर**—व्रज का; **कर**—करो; **परित्राण**—उद्धार; **बहु**—बहुत; **कार्य्ये**—गतिविधियों में; **नाहि**—नहीं है; **अवकाश**—अवकाश; **तुमि**—आप; **आमार**—मेरे; **रमण**—भोक्ता; **सुख**—सुख; **दिते**—देने के लिए; **आगमन**—आगमन; **ए**—यह; **तोमार**—आपका; **वैदग्ध्य-विलास**—दक्ष कार्यकलाप।

## अनुवाद

**"हे नाथ, आप वृन्दावन के स्वामी तथा उसके प्राण हैं। कृपा करके**

**वृन्दावन के उद्धार का उपाय कीजिये। हमें अपने अनेक कामों से तनिक भी अवकाश नहीं है। वास्तव में आप मेरे भोक्ता हैं। आप मुझे सुख प्रदान करने के लिए ही प्रकट हुए हैं और यह आपकी दक्ष लीलाओं में से एक है।**

तात्पर्य

*वैदग्ध्य* शब्द का अर्थ है अत्यन्त दक्ष, विद्वान, विनोदी, चतुर, सुन्दर तथा व्यंग्य-पटु व्यक्ति।

মোর বাক্য নিন্দা মানি, কৃষ্ণ ছাড়ি' গেলা জানি,
শুন, মোর এ স্তুতি-বচন ।
নয়নের অভিরাম, তুমি মোর ধন-প্রাণ,
হা-হা পুনঃ দেহ দরশন ॥৭১॥

**मोर वाक्य निन्दा मानि, कृष्ण छाड़ि' गेला जानि,**
**शुन, मोर ए स्तुति-वचन ।**
**नयनेर अभिराम, तुमि मोर धन-प्राण,**
**हा-हा पुनः देह दरशन ॥७१॥**

**मोर**—मेरे; **वाक्य**—वचन; **निन्दा**—निन्दा; **मानि**—मानकर ; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **छाड़ि'**—त्यागकर; **गेला**—चले गये; **जानि**—मैं जानता हूँ; **शुन**—सुनो; **मोर**—मेरा; **ए**—यह; **स्तुति-वचन**—प्रशंसा युक्त वचन; **नयनेर**—आँखों का; **अभिराम**—सन्तोष; **तुमि**—आप हो; **मोर**—मेरे ; **धन-प्राण**—जीवन और प्राण; **हा-हा**—हाय; **पुनः**—पुनः; **देह**—मुझे दो; **दरशन**—दर्शन।

अनुवाद

**"मेरे वचनों को निन्दा मानकर भगवान् कृष्ण मुझे छोड़कर चले गये हैं। मैं जानता हूँ कि वे चले गये हैं, किन्तु मेरी स्तुति सुन लीजिये : 'आप मेरे नेत्रों की तुष्टि हो। आप ही मेरे धन और जीवन हो। हाय! कृपया एक बार फिर मुझे अपना दर्शन दीजिये।'"**

স্তম্ভ, কম্প, প্রস্বেদ, বৈবর্ণ্য, অশ্রু, স্বর-ভেদ,
দেহ হৈল পুলকে ব্যাপিত ।

হাসে, কান্দে, নাচে, গায়, উঠি' ইতি উতি ধায়,
ক্ষণে ভূমে পড়িয়া মূৰ্চ্ছিত ॥৭২॥

**स्तम्भ, कम्प, प्रस्वेद, वैवर्ण्य, अश्रु, स्वर-भेद,**
**देह हैल पुलके व्यापित ।**
**हासे, कान्दे, नाचे, गाय, उठि' इति उति धाय,**
**क्षणे भूमे पड़िया मूर्च्छित ॥७२॥**

**स्तम्भ**—जड़ हो जाना; **कम्प**—कांपना; **प्रस्वेद**—पसीना आना; **वैवर्ण्य**—शारीरिक रंग का फीका पड़ जाना; **अश्रु**—अश्रु; **स्वर-भेद**—गला रूँध जाना; **देह**—शरीर; **हैल**—था; **पुलके**—हर्षित; **व्यापित**—आच्छादित; **हासे**—हँसते; **कान्दे**—रोते; **नाचे**—नाचते; **गाय**—गाते; **उठि'**—उठकर; **इति उति**—इधर-उधर; **धाय**—दौड़ते; **क्षणे**—कभी-कभी; **भूमे**—पृथ्वी पर; **पड़िया**—गिर जाते; **मूर्च्छित**—मूर्च्छित।

### अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु के शरीर में विविध विकार प्रकट होते थे—स्तम्भित होना, कांपना, पसीना आना, रंग फीका पड़ना, रोना और गला रुँधना। इस प्रकार उनका सारा शरीर दिव्य आनन्द से व्याप्त रहता था। फलस्वरूप श्री चैतन्य महाप्रभु कभी हँसते, कभी रोते, कभी नाचते तो कभी गाते थे। कभी वे उठकर इधर-उधर दौड़ते और कभी भूमि पर गिर जाते और अचेत हो जाते।**

### तात्पर्य

*भक्तिरसामृत-सिन्धु* में शरीर में होने वाले आठ प्रकार के दिव्य विकारों (सात्त्विक भावों) का वर्णन हुआ है। *स्तम्भ* मन की दिव्य तल्लीनता का सूचक है। इस दशा में शान्त मन प्राण-वायु पर स्थित होता है और शरीर में विविध प्रकार के विकार प्रकट होते हैं। ये लक्षण उच्च कोटि के भक्त के शरीर में प्रकट होते हैं। जब जीवन निश्चेष्टप्राय हो जाता है, तो उसे "स्तम्भित" कहते हैं। इस दशा में हर्ष, भय, आश्चर्य, विषाद तथा क्रोध के भाव प्रकट होते हैं। इस दशा में वाक्-शक्ति जाती रहती है और हाथ-पैर की गति रुक जाती है। अन्यथा स्तम्भ तो मानसिक अवस्था है। प्रारम्भ में शरीर में अन्य अनेक लक्षण देखे जाते हैं। पहले वे अत्यन्त सूक्ष्म होते हैं, किन्तु धीरे-धीरे वे स्पष्ट होने लगते हैं। जब कोई बोल नहीं सकता, तो स्वाभाविक है कि उसकी कर्मेन्द्रियाँ जड़

हो जाती हैं और ज्ञानेन्द्रियाँ निष्क्रिय बन जाती हैं। *भक्तिरसामृत-सिन्धु* में *कम्प* को विशेष प्रकार के भय, क्रोध तथा हर्ष से उत्पन्न बतलाया गया है। इसे *वेपथु* कहते हैं। जब हर्ष, भय तथा क्रोध के मिलने से शरीर में पसीना आने लगता है, तो इसे *स्वेद* कहते हैं। शरीर के रंग में परिवर्तन होने को *वैवर्ण्य* कहा जाता है। यह विषाद, क्रोध तथा भय के मिलने से उत्पन्न होता है। जब इन भावों की अनुभूति होती है, तो मुख का रंग पीला पड़ जाता है और शरीर पतला तथा दुर्बल पड़ जाता है। *भक्तिरसामृत-सिन्धु* में *अश्रु* को हर्ष, क्रोध तथा विषाद का मेल कहा गया है, जिससे बिना प्रयास के ही आँखों से आँसू बहने लगते हैं। जब हर्ष के कारण अश्रु आते हैं, तो वे ठण्डे होते हैं, किन्तु क्रोध के कारण आये अश्रु गर्म होते हैं। दोनों ही दशाओं में आँखें चंचल रहती हैं, पुतलियाँ लाल हो जाती हैं और उनमें खुजली होती है। ये सारे *अश्रु* के लक्षण हैं। जब विषाद, आश्चर्य, क्रोध, हर्ष तथा भय का मेल होता है, तब गला रूंध जाता है। यह अवरोध *गद्गद* कहलाता है। श्री चैतन्य महाप्रभु *गद्गद रुद्धया गिरा* की ओर संकेत करते हैं। *भक्तिरसामृत-सिन्धु* में *पुलक* को हर्ष, उत्साह तथा भय कहा गया है। इनके मिश्रण से शरीर के रोम खड़े हो जाते हैं और यह शारीरिक दशा *पुलक* कहलाती है।

মূর্চ্ছায় হৈল সাক্ষাত্কার, উঠি' করে হুহুঙ্কার,
কহে—এই আইলা মহাশয় ।
কৃষ্ণের মাধুরী-গুণে, নানা ভ্রম হয় মনে,
শ্লোক পড়ি' করয়ে নিশ্চয় ॥৭৩॥

**मूर्च्छाय हैल साक्षात्कार, उठि' करे हुहुङ्कार,**
**कहे—एइ आइला महाशय ।**
**कृष्णेर माधुरी-गुणे, नाना भ्रम हय मने,**
**श्लोक पड़ि' करये निश्चय ॥ ७३ ॥**

**मूर्च्छाय**—मूर्च्छा में; **हैल**—हुइ; **साक्षात्कार**—भेंट; **उठि'**—उठकर; **करे**—करते; **हु-हुँ-कार**—हुँकार करना; **कहे**—कहते; **एइ**—इस प्रकार; **आइला**—वे आये हैं; **महा-आशय**—महापुरुष; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण की; **माधुरी**—मधुरता; **गुणे**—गुणों से;

**नाना**—नाना; **भ्रम**—भ्रम; **हय**—हैं; **मने**—मन में; **श्लोक**—श्लोक; **पड़ि'**—पढ़कर; **करये**—करते; **निश्चय**—निश्चय।

अनुवाद

**जब श्री चैतन्य महाप्रभु अचेत थे, तब उनकी भेंट पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् से हुई। फलस्वरूप वे तुरन्त उठकर जोर से हुंकार करने लगे और उन्होंने ऊँचे स्वर में घोषित किया, "महापुरुष कृष्ण अब उपस्थित हैं।" इस प्रकार कृष्ण के मधुर गुणों के कारण चैतन्य महाप्रभु को मन में तरह-तरह के भ्रम होते थे। वे निम्नलिखित श्लोक को पढ़कर भगवान् कृष्ण की उपस्थिति सुनिश्चित करते थे।**

মারঃ স্বয়ং নু মধুর-দ্যুতি-মণ্ডলং নু
মাধুর্যমেব নু মনো-নয়নামৃতং নু ।
বেণী-মৃজো নু মম জীবিত-বল্লভো নু
কৃষ্ণোঽয়মভ্যুদয়তে মম লোচনায় ॥৭৪॥

**मारः स्वयं नु मधुर-द्युति-मण्डलं नु**
**माधुर्य्यमेव नु मनो-नयनामृतं नु ।**
**वेणी-मृजो नु मम जीवित-वल्लभो नु**
**कृष्णोऽयमभ्युदयते मम लोचनाय ॥ ७४ ॥**

**मारः**—कामदेव; **स्वयम्**—स्वयं; **नु**—क्या; **मधुर**—मधुर; **द्युति**—प्रकाश की; **मण्डलम्**—मण्डल; **नु**—क्या; **माधुर्य्यम्**—माधुर्य; **एव**—भी; **नु**—अवश्य; **मनः-नयन-अमृतम्**—मन तथा नेत्रों के लिए अमृत; **नु**—क्या; **वेणी-मृजः**—बालों का ढीला होना; **नु**—क्या; **मम**—मेरे; **जीवित-वल्लभः**—जीवन और आत्मा के सुख; **नु**—क्या; **कृष्णः**—भगवान् कृष्ण; **अयम्**—यह; **अभ्युदयते**—प्रकट होते हैं; **मम**—मेरे; **लोचनाय**—नेत्रों के लिए।

अनुवाद

**राधारानी के भाव में श्री चैतन्य महाप्रभु ने गोपियों को सम्बोधित किया, "'हे सखियों, कदम्ब पुष्प के समान तेजस्वी, साक्षात् माधुर्य, मेरी आँखों तथा मन के अमृत, गोपियों के बालों को शिथिल करने वाले, दिव्य आनन्द के परम स्रोत और मेरे जीवन-प्राण रूपी मूर्तिमान कामदेव कृष्ण कहाँ हैं? क्या वे मेरे नेत्रों के समक्ष दोबारा प्रकट हुए हैं?'"**

**तात्पर्य**

यह *कृष्णकर्णामृत* का एक अन्य श्लोक (६८) है।

কিবা এই সাক্ষাত্কাম, দ্যুতি-বিম্ব মূর্তিমান্,
কি মাধুর্য স্বয়ং মূর্তিমন্ত ।
কিবা মনো-নেত্রোত্সব, কিবা প্রাণ-বল্লভ,
সত্য কৃষ্ণ আইলা নেত্রানন্দ ॥৭৫॥

**किबा एइ साक्षात्काम, द्युति-बिम्ब मूर्तिमान्,**
**कि माधुर्य्य स्वयं मूर्तिमन्त ।**
**किबा मनो-नेत्रोत्सव, किबा प्राण-वल्लभ,**
**सत्य कृष्ण आइला नेत्रानन्द ॥ ७५ ॥**

**किबा**—क्या; **एइ**—यह; **साक्षात्**—साक्षात्; **काम**—कामदेव; **द्युति-बिम्ब**—तेज का प्रतिबिम्ब; **मूर्तिमान्**—मूर्तिमान; **कि**—क्या; **माधुर्य्य**—मधुरता; **स्वयम्**—स्वयं; **मूर्तिमन्त**—मूर्तिमान; **किबा**—क्या; **मनः-नेत्र-उत्सव**—मन तथा नेत्रों के लिए उत्सव; **किबा**—क्या; **प्राण-वल्लभ**—प्राण प्रिय; **सत्य**—सत्य; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **आइला**—आये हैं; **नेत्र-आनन्द**—मेरे नेत्रों के आनन्द।

**अनुवाद**

**तब श्री चैतन्य महाप्रभु इस प्रकार कहने लगे, "क्या कदम्ब वृक्ष के तेज एवं प्रतिबिम्ब के साथ साक्षात् कामदेव उपस्थित है? क्या ये वही व्यक्ति हैं, जो साक्षात् माधुर्य हैं, जो मेरी आँखों तथा मन के आनन्द हैं, जो मेरे जीवन और प्राण हैं? क्या सचमुच कृष्ण मेरी आँखों के सामने आ गये हैं?"**

গুরু—নানা ভাব-গণ, শিষ্য—প্রভুর তনু-মন,
নানা রীতে সতত নাচায় ।
নির্বেদ, বিষাদ, দৈন্য, চাপল্য, হর্ষ, ধৈর্য, মন্যু,
এই নৃত্যে প্রভুর কাল যায় ॥৭৬॥

**गुरु—नाना भाव-गण, शिष्य—प्रभुर तनु-मन,**
**नाना रीते सतत नाचाय ।**

**निर्वेद, विषाद, दैन्य, चापल्य, हर्ष, धैर्य्य, मन्यु,**
**एइ नृत्ये प्रभुर काल ग्राय ॥ ७६ ॥**

**गुरु**—गुरु; **नाना**—नाना; **भाव-गण**—भाव; **शिष्य**—शिष्य; **प्रभुर**—चैतन्य महाप्रभु का; **तनु-मन**—तन और मन; **नाना**—नाना; **रीते**—प्रकार से; **सतत**—सदा; **नाचाय**—नचाता; **निर्वेद**—उदासी; **विषाद**—दु:ख; **दैन्य**—नम्रता; **चापल्य**—अधीरता; **हर्ष**—हर्ष; **धैर्य्य**—धैर्य; **मन्यु**—क्रोध; **एइ**—यह; **नृत्ये**—नृत्य में; **प्रभुर**—महाप्रभु का; **काल**—समय; **ग्राय**—व्यतीत होता।

अनुवाद

**जिस प्रकार गुरु शिष्य को डांटता है और उसे भक्ति की कला सिखलाता है, उसी प्रकार निर्वेद ( उदासी ), विषाद, दीनता, चंचलता, हर्ष, धैर्य और क्रोध आदि भाव महाप्रभु के शरीर तथा मन को शिक्षा देते थे। इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु अपना समय बिताते थे।**

চণ্ডীদাস, বিদ্যাপতি, রায়ের নাটক-গীতি,
কর্ণামৃত, শ্রী-গীত-গোবিন্দ ।
স্বরূপ-রামানন্দ-সনে, মহাপ্রভু রাত্রি-দিনে,
গায়, শুনে—পরম আনন্দ ॥ ৭৭ ॥

**चण्डीदास, विद्यापति, रायेर नाटक-गीति,**
**कर्णामृत, श्री-गीत-गोविन्द ।**
**स्वरूप-रामानन्द-सने, महाप्रभु रात्रि-दिने,**
**गाय, शुने—परम आनन्द ॥ ७७ ॥**

**चण्डीदास**—कवि चण्डीदास; **विद्यापति**—कवि विद्यापति; **रायेर**—कवि रामानन्द राय का; **नाटक**—जगन्नाथ-वल्लभ नाटक; **गीति**—गीत; **कर्णामृत**—बिल्वमंगल ठाकुर का कृष्ण कर्णामृत; **श्री-गीत-गोविन्द**—जयदेव गोस्वामी का गीत-गोविन्द; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर; **रामानन्द-सने**—राय रामानन्द के साथ; **महाप्रभु**—चैतन्य महाप्रभु; **रात्रि-दिने**—दिन और रात; **गाय**—गाते; **शुने**—सुनते; **परम आनन्द**—परम आनन्द के साथ।

अनुवाद

**वे अपना समय पुस्तकें पढ़ने तथा चण्डीदास और विद्यापति द्वारा रचित गीत गाने और जगन्नाथ वल्लभ नाटक, कृष्णकर्णामृत तथा गीतगोविन्द के उद्धरण सुनने में बिताते थे। इस तरह स्वरूप दामोदर तथा**

**राय रामानन्द के साथ श्री चैतन्य महाप्रभु परम आनन्द के साथ कीर्तन एवं श्रवण करके दिन तथा रात व्यतीत करते थे।**

পুরীর বাৎসল্য মুখ্য, রামানন্দের শুদ্ধ-সখ্য,
গোবিন্দাদ্যের শুদ্ধ-দাস্য-রস ।
গদাধর, জগদানন্দ, স্বরূপের মুখ্য রসানন্দ,
এই চারি ভাবে প্রভু বশ ॥৭৮॥

**पुरीर वात्सल्य मुख्य, रामानन्देर शुद्ध-सख्य,**
**गोविन्दाद्येर शुद्ध-दास्य-रस ।**
**गदाधर, जगदानन्द, स्वरूपेर मुख्य रसानन्द,**
**एइ चारि भावे प्रभु वश ॥७८॥**

**पुरीर**—परमानन्द पुरी का; **वात्सल्य**—वात्सल्य; **मुख्य**—प्रमुख; **रामानन्देर**—राय रामानन्द की; **शुद्ध-सख्य**—शुद्ध मित्रता; **गोविन्द-आद्येर**—गोविन्द तथा अन्यों का; **शुद्ध-दास्य-रस**—शुद्ध दास्य रस; **गदाधर**—गदाधर पण्डित; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **स्वरूपेर**—स्वरूप दामोदर का; **मुख्य**—मुख्य; **रस-आनन्द**—माधुर्य-प्रेम के आनन्द का आस्वादन; **एइ**—ये; **चारि**—चार; **भावे**—भाव; **प्रभु**—प्रभु; **वश**—वश में रहते।

### अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु को अपने पार्षदों में परमानन्द पुरी से वात्सल्य, रामानन्द राय से सख्य, गोविन्द तथा अन्यों से शुद्ध दास्य और गदाधर, जगदानन्द तथा स्वरूप दामोदर से माधुर्य रस का आनन्द प्राप्त होता था। श्री चैतन्य महाप्रभु इन चारों रसों का आस्वादन करते और इस तरह अपने भक्तों के वश में रहते हुए जगन्नाथ पुरी में रहे।**

### तात्पर्य

कहा जाता है कि परमानन्द पुरी वृन्दावन में उद्धव हैं। उनका श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ वात्सल्य प्रेम था। इसका कारण यह था कि परमानन्द पुरी श्री चैतन्य महाप्रभु के गुरु के गुरुभाई थे। इसी प्रकार रामानन्द राय, जिन्हें कुछ अर्जुन का अवतार मानते हैं, तो कुछ विशाखा देवी का, महाप्रभु के साथ शुद्ध सख्य रस का आस्वादन करते थे। गोविन्द तथा अन्य भक्त शुद्ध दास्य रस का आस्वादन करते थे। श्री चैतन्य महाप्रभु अपने अन्तरंग पार्षदों यथा गदाधर

पंडित, जगदानन्द पण्डित तथा स्वरूप दामोदर की उपस्थिति में कृष्ण के साथ श्रीमती राधारानी के माधुर्य रस का आनन्द लेते थे। इन चारों दिव्य रसों में निमग्न रहकर श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथ पुरी में अपने भक्तों के प्रति अत्यन्त कृतज्ञता का अनुभव करते थे।

লীলাশুক——মর্ত্য-জন, তাঁর হয় ভাবোদগম,
ঈশ্বরে সে——কি ইহা বিস্ময় ।
তাহে মুখ্য-রসাশ্রয়, হইয়াছেন মহাশয়,
তাতে হয় সর্ব-ভাবোদয় ॥৭৯॥

**लीलाशुक——मर्त्य-जन, ताँर हय भावोद्गम,**
**ईश्वरे से——कि इहा विस्मय ।**
**ताहे मुख्य-रसाश्रय, हइयाछेन महाशय,**
**ताते हय सर्व-भावोदय ॥ ७९ ॥**

**लीला-शुक**—बिल्वमंगल ठाकुर; **मर्त्य-जन**—मर्त्य लोक का व्यक्ति; **ताँर**—उनका; **हय**—है; **भाव-उद्गम**—विभिन्न भावों का प्राकट्य; **ईश्वरे**—ईश्वर में; **से**—वह; **कि**—क्या; **इहा**—यहाँ; **विस्मय**—आश्चर्य; **ताहे**—उसमें; **मुख्य-रस**-प्रधान रस (माधुर्य रस); **आश्रय**—धाम; **ह-इयाछेन**—हो गया है; **महा-आशय**—महान् व्यक्ति श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताते**—अत:; **हय**—है; **सर्व-भाव-उदय**—सर्व भावों का प्राकट्य।

### अनुवाद

**लीलाशुक ( बिल्वमंगल ठाकुर ) एक सामान्य मनुष्य थे; फिर भी उनके शरीर में अनेक भाव उत्पन्न होते थे। तो फिर यदि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के शरीर में ये लक्षण प्रकट हों, तो कौन-सा आश्चर्य है? श्री चैतन्य महाप्रभु माधुर्य भाव में सर्वोच्च स्थिति पर थे, अतएव उनके शरीर में समस्त भाव स्वाभाविक रूप से प्रकट होते थे।**

### तात्पर्य

लीलाशुक बिल्वमंगल ठाकुर गोस्वामी हैं। वे दक्षिण भारत के ब्राह्मण थे और उनका पहले का नाम शिल्हण मिश्र था। जब वे गृहस्थ थे, तो चिन्तामणि नामक एक वेश्या पर आसक्त हो गये। किन्तु अन्त में उसीसे उपदेश ग्रहण करके उन्होंने वैराग्य ले लिया। उन्होंने एक पुस्तक *शान्तिशतक* लिखी और

बाद में वे भगवान् कृष्ण तथा वैष्णवों की कृपा से महान् भक्त बने। तब वे बिल्वमंगल ठाकुर गोस्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए। उस उन्नत अवस्था में उन्होंने *कृष्णकर्णामृत* नामक एक पुस्तक लिखी, जो वैष्णवों में अत्यधिक विख्यात है। चूँकि वे अनेक भावमय लक्षण प्रदर्शित करते थे, अतएव लोग उन्हें लीलाशुक कहकर पुकारते थे।

পূর্বে ব্রজ-বিলাসে, যেই তিন অভিলাষে,
যত্নেহ আস্বাদ না হৈল ।
শ্রী-রাধার ভাব-সার, আপনে করি' অঙ্গীকার,
সেই তিন বস্তু আস্বাদিল ॥ ৮০ ॥

**पूर्वे व्रज-विलासे, ग्रेइ तिन अभिलाषे,**
**ग्रत्नेह आस्वाद ना हैल ।**
**श्री-राधार भाव-सार, आपने करि' अङ्गीकार,**
**सेइ तिन वस्तु आस्वादिल ॥ ८० ॥**

**पूर्वे**—पूर्व में; **व्रज-विलासे**—वृन्दावन की लीलाओं में; **ग्रेइ तिन**—ये तीन; **अभिलाषे**—इच्छाओं में; **ग्रत्नेह**—अत्यन्त प्रयत्न से; **आस्वाद**—आस्वादन; **ना हैल**—नहीं था; **श्री-राधार**—श्रीमती राधारानी का; **भाव-सार**—भाव का सार; **आपने**—स्वयं; **करि'**—करके; **अङ्गीकार**—स्वीकार; **सेइ**—वे; **तिन वस्तु**—तीन विषय; **आस्वादिल**—आस्वादन किया।

अनुवाद

**वृन्दावन की अपनी पूर्ववर्ती लीलाओं में भगवान् कृष्ण तीन विभिन्न प्रकार के भावों का आस्वादन करना चाहते थे, किन्तु अत्यधिक प्रयत्नों के बाद भी वे वैसा नहीं कर पाये। ऐसे भावों पर श्रीमती राधारानी का एकाधिकार है। अतएव उनका आस्वादन करने के लिए ही श्रीकृष्ण ने श्री चैतन्य महाप्रभु के रूप में श्रीमती राधारानी का स्थान अंगीकार किया।**

আপনে করি' আস্বাদনে, শিখাইল ভক্ত-গণে,
প্রেম-চিন্তামণির প্রভু ধনী ।
নাহি জানে স্থানাস্থান, যারে তারে কৈল দান,
মহাপ্রভু—দাতা-শিরোমণি ॥ ৮১ ॥

**आपने करि' आस्वादने, शिखाइल भक्त-गणे,**
**प्रेम-चिन्तामणिर प्रभु धनी ।**
**नाहि जाने स्थानास्थान, ग्रारे तारे कैल दान,**
**महाप्रभु—दाता-शिरोमणि ॥८१॥**

**आपने**—स्वयं; **करि'**—करके; **आस्वादने**—आस्वादन; **शिखाइल**—उन्होंने सिखाया; **भक्त-गणे**—अपने प्रत्यक्ष शिष्यों को; **प्रेम-चिन्तामणिर**—भगवत् प्रेम की चिन्तामणि; **प्रभु**—महाप्रभु; **धनी**—धनवान; **नाहि**—नहीं; **जाने**—जानते; **स्थान-अस्थान**—उचित अथवा अनुचित स्थान; **ग्रारे**—जिस किसी को भी; **तारे**—उसको; **कैल**—किया; **दान**—दान; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **दाता-शिरोमणि**—सर्वाधिक उदार व्यक्ति।

## अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्वयं भगवत्प्रेम रस का आस्वादन करके अपने शिष्यों को इस विधि की शिक्षा दी। वे भगवत्-प्रेम रूपी चिन्तामणि ( पारस पत्थर ) से संपन्न सर्वाधिक धनवान व्यक्ति हैं। वे पात्र-कुपात्र का विचार किये बिना हर एक को यह धन प्रदान करते हैं। इस प्रकार वे अत्यन्त उदार हैं।**

## तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु की पूँजी है भगवत्प्रेम रूपी चिन्तामणि, अतएव वे दिव्य कोष के स्वामी हैं। असीम मात्रा में सोना बनाने के बाद भी चिन्तामणि जैसे का तैसा बना रहता है। इसी प्रकार श्री चैतन्य महाप्रभु भगवत्प्रेम का असीम वितरण करने पर भी इस दिव्य सम्पत्ति के सर्वोपरि स्वामी बने रहे। उनके भक्तों ने भी उनसे सीखकर सारे विश्व में मुक्त हस्त से इसका वितरण किया। यह कृष्णभावनामृत आन्दोलन श्री चैतन्य महाप्रभु एवं उनके अन्तरंग भक्तों के चरणचिह्नों पर चलते हुए सारे विश्व में भगवान् के पवित्र नामों के संकीर्तन द्वारा भगवत्-प्रेम का वितरण करने का प्रयास कर रहा है—हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।

**এই গুপ্ত ভাব-সিন্ধু, ব্রহ্মা না পায় এক বিন্দু,**
**হেন ধন বিলাইল সংসারে ।**
**ঐছে দয়ালু অবতার, ঐছে দাতা নাহি আর,**
**গুণ কেহ নারে বর্ণিবারে ॥৮২॥**

**एइ गुप्त भाव-सिन्धु, ब्रह्मा ना पाय एक बिन्दु,**
**हेन धन विलाइल संसारे ।**
**ऐछे दयालु अवतार, ऐछे दाता नाहि आर,**
**गुण केह नारे वर्णिबारे ॥८२॥**

**एइ**—यह; **गुप्त**—गुप्त; **भाव-सिन्धु**—भाव का समुद्र; **ब्रह्मा**—ब्रह्माजी; **ना**—नहीं; **पाय**—पाते; **एक**—एक; **बिन्दु**—बूँद; **हेन**—ऐसा; **धन**—धन; **विलाइल**—वितरित किया; **संसारे**—सारे संसार में; **ऐछे**—ऐसे; **दयालु**—दयालु; **अवतार**—अवतार; **ऐछे**—ऐसे; **दाता**—दानी; **नाहि**—नहीं हैं; **आर**—और कोई; **गुण**—यह गुण; **केह**—कोई भी; **नारे**—नहीं; **वर्णिबारे**—वर्णन कर सकता।

अनुवाद

**ब्रह्माजी समेत कोई भी इस गुप्त भाव-सिन्धु की एक बूँद का भी पार नहीं पा सकता या आस्वादन नहीं कर सकता। किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपनी अहैतुकी कृपा से इस भगवत्प्रेम को सारे विश्व में बाँट दिया है। अतएव श्री चैतन्य महाप्रभु से बढ़कर उदार अन्य कोई अवतार नहीं हो सकता। उनसे बड़ा दाता कोई नहीं है। भला उनके दिव्य गुणों का वर्णन कौन कर सकता है?**

কহিবার কথা নহে, কহিলে কেহ না বুঝয়ে,
ঐছে চিত্র চৈতন্যের রঙ্গ ।
সেই সে বুঝিতে পারে, চৈতন্যের কৃপা যাঁরে,
হয় তাঁর দাসানুদাস-সঙ্গ ॥৮৩॥

**कहिबार कथा नहे, कहिले केह ना बुझये,**
**ऐछे चित्र चैतन्येर रङ्ग ।**
**सेइ से बुझिते पारे, चैतन्येर कृपा य़ाँरे,**
**हय ताँर दासानुदास-सङ्ग ॥८३॥**

**कहिबार कथा नहे**—कहने योग्य विषय नहीं; **कहिले**—यदि कहा जाये; **केह**—कोई; **ना बुझये**—नहीं समझता; **ऐछे**—इस प्रकार का; **चित्र**—अद्‌भुत; **चैतन्येर**—चैतन्य महाप्रभु की; **रङ्ग**—लीलाएँ; **सेइ से**—जो कोई; **बुझिते**—समझने में; **पारे**—सक्षम है; **चैतन्येर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **कृपा**—कृपा; **य़ाँरे**—जिस पर; **हय**—हो जाती है; **ताँर**—उनके; **दास-अनुदास-सङ्ग**—दास के दास की संगति।

अनुवाद

**ऐसी कथाएँ सार्वजनिक रूप से कहने के लिए नहीं हैं, क्योंकि ऐसा करने पर भी कोई उन्हें समझ नहीं पायेगा। श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ इतनी अद्भुत हैं। जो उन्हें समझ सकता है, उस पर श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने निजी दास के दास की संगति प्रदान करके अवश्य कृपा की है।**

तात्पर्य

सामान्य व्यक्ति श्रीमती राधारानी के दिव्य भावों को नहीं समझ सकता। अयोग्य होने पर भी जो उन भावों को समझने का प्रयास करने वाले लोग विकृत होकर *सहजिया, बाउल* तथा अन्य सम्प्रदायों में परिवर्तित हो जाते हैं। इस तरह उनकी शिक्षाएँ विकृत होती हैं। यहाँ तक कि शैक्षिक क्षेत्र के विद्वान पण्डित भी श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके शुद्ध भक्तों द्वारा प्रदर्शित भाव एवं दिव्य आनन्द को नहीं समझ सकते। श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं को समझने के लिए मनुष्य में योग्यता होनी चाहिए।

চৈতন্য-লীলা-রত্ন-সার, স্বরূপের ভাণ্ডার,
তেঁহো থুইলা রঘুনাথের কণ্ঠে ।
তাহাঁ কিছু যে শুনিলুঁ, তাহা ইহাঁ বিস্তারিলুঁ,
ভক্ত-গণে দিলুঁ এই ভেটে ॥৮৪॥

**चैतन्य-लीला-रत्न-सार, स्वरूपेर भाण्डार,**
**तेंहो थुइला रघुनाथेर कण्ठे ।**
**ताहाँ किछु ये शुनिलुँ, ताहा इहाँ विस्तारिलुँ,**
**भक्त-गणे दिलुँ एइ भेटे ॥८४॥**

**चैतन्य-लीला**—चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ; **रत्न-सार**—सर्वोत्कृष्ट रत्न; **स्वरूपेर**—स्वरूप दामोदर के; **भाण्डार**—भण्डार; **तेंहो**—उन्होंने; **थुइला**—रखा; **रघुनाथेर कण्ठे**—रघुनाथ दास गोस्वामी के गले में; **ताहाँ**—वहाँ; **किछु ये**—जो कुछ थोड़ा सा; **शुनिलुँ**—मैंने सुना है; **ताहा**—केवल वह; **इहाँ**—इस ग्रन्थ में; **विस्तारिलुँ**—मैंने वर्णन किया है; **भक्त-गणे**—शुद्ध भक्तों को; **दिलुँ**—मैंने दी; **एइ**—यह; **भेटे**—भेंट।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ सर्वश्रेष्ठ रत्न हैं। वे स्वरूप दामोदर**

**गोस्वामी के भंडार में रखे हुए थे। स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने रघुनाथ दास गोस्वामी को उनके बारे में बतलाया और रघुनाथ दास गोस्वामी ने ये लीलाएँ मेरे सामने दोहरायी। मैंने जो कुछ थोड़ा-बहुत रघुनाथ दास गोस्वामी से सुना, उसी को इस पुस्तक में, सभी भक्तों को भेंट स्वरूप, वर्णित किया है।**

**तात्पर्य**

श्री चैतन्य महाप्रभु की सारी लीलाएँ उनके निजी सचिव स्वरूप दामोदर द्वारा लिपिबद्ध की जाती थीं और रघुनाथ दास गोस्वामी के समक्ष दोहरायी जाती थीं, जिन्हें वे स्मरण कर लिया करते थे। कृष्णदास कविराज गोस्वामी ने जो कुछ सुना, उसे ही *श्रीचैतन्य-चरितामृत* में लिपिबद्ध कर दिया गया है। श्री चैतन्य महाप्रभु से स्वरूप दामोदर, उनसे रघुनाथ दास गोस्वामी, उनसे कविराज गोस्वामी तक चली आ रही इस पद्धति को परम्परा कहते हैं। कृष्णदास कविराज गोस्वामी ने इस जानकारी को अपनी कृति *चैतन्य-चरितामृत* में वितरित की है। दूसरे शब्दों में, *श्री चैतन्य-चरितामृत* श्री चैतन्य महाप्रभु से प्रारम्भ होने वाली गुरू परम्परा के उपदेश का सार है।

যদি কেহ হেন কয়, গ্রন্থ কৈল শ্লোক-ময়,
ইতর জনে নারিবে বুঝিতে ।
প্রভুর যেই আচরণ, সেই করি বর্ণন,
সর্ব-চিত্ত নারি আরাধিতে ॥ ৮৫ ॥

**य़दि केह हेन कय, ग्रन्थ कैल श्लोक-मय,**
**इतर जने नारिबे बुझिते ।**
**प्रभुर य़েइ आचरण, सेइ करि वर्णन,**
**सर्व-चित्त नारि आराधिते ॥ ८५ ॥**

**य़दि**—यदि; **केह**—कोई; **हेन**—इस प्रकार; **कय**—कहता है; **ग्रन्थ**—यह ग्रन्थ; **कैल**—बनाया गया है; **श्लोक-मय**—विविध संस्कृत श्लोकों से; **इतर**—साधारण; **जने**—लोग; **नारिबे बुझिते**—नहीं समझ सकेंगे; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **य़েइ**—जो कुछ; **आचरण**—कार्यकलाप; **सेइ**—वह; **करि**—मैं करता हूँ; **वर्णन**—वर्णन; **सर्व-चित्त**—सभी हृदयों को; **नारि**—मैं सक्षम नहीं हूँ; **आराधिते**—सन्तुष्ट करने में।

### अनुवाद

**यदि कोई यह कहता है कि *श्रीचैतन्य-चरितामृत* संस्कृत श्लोकों से भरी होने के कारण साधारण व्यक्तियों की समझ के बाहर है, तो मैं इसका उत्तर यही दूँगा कि मैंने इसमें श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का ही वर्णन किया है और मेरे लिए हर एक को सन्तुष्ट करना सम्भव नहीं है।**

### तात्पर्य

श्रील कविराज गोस्वामी तथा उनके अनुयायियों को जनता का मनोरंजन करने की आवश्यकता नहीं है। उनका एकमात्र कार्य पूर्ववर्ती आचार्यों को सन्तुष्ट करना और भगवान् की लीलाओं का वर्णन करना है। जो समझ सकता है, वही इस महान् दिव्य ग्रंथ का आस्वादन कर सकता है। यह ग्रंथ पंडितों तथा ज्ञानियों जैसे साधारण लोगों के लिए नहीं है। सामान्यतया *श्री चैतन्य-चरितामृत* में लिपिबद्ध की गई श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का अध्ययन विश्वविद्यालयों तथा विद्वानों की गोष्ठियों में साहित्यिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से किया जाता है, किन्तु वास्तव में यह ग्रंथ शोधकर्ताओं या साहित्यिक विद्वानों के लिए नहीं है। यह केवल उन भक्तों के निमित्त है, जिन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया है।

নাহি কাহাঁ সবিরোধ, নাহি কাহাঁ অনুরোধ,
সহজ বস্তু করি বিবরণ ।
যদি হয় রাগোদ্দেশ, তাহাঁ হয়ে আবেশ,
সহজ বস্তু না যায় লিখন ॥৮৬॥

**नाहि काहाँ सविरोध, नाहि काहाँ अनुरोध,**
**सहज वस्तु करि विवरण ।**
**ग्रदि हय रागोद्देश, ताहाँ हये आवेश,**
**सहज वस्तु ना ग्राय लिखन ॥ ८६ ॥**

**नाहि**—नहीं है; **काहाँ**—कहीं भी; **स-विरोध**—विरोधी तत्त्व; **नाहि**—नहीं है; **काहाँ**—कहीं भी; **अनुरोध**—किसी के मत का स्वीकार; **सहज**—सरल; **वस्तु**—वस्तु; **करि**—मैं

करता हूँ; **विवरण**—वर्णन; **ग्रदि**—यदि; **हय**—है; **राग-उद्देश**—किसी का आकर्षण अथवा रुकावट; **ताहाँ**—वहाँ; **हये**—होना; **आवेश**—उलझना; **सहज**—सहज; **वस्तु**—वस्तु; **ना ग्राय**—सम्भव नहीं; **लिखन**—लिखना।

### अनुवाद

**इस चैतन्य-चरितामृत में न तो कोई विरोधात्मक निर्णय है, न ही किसी अन्य के मत को स्वीकृति दी गई है। मैंने यह पुस्तक उस सहज विषयवस्तु का वर्णन करने के लिए लिखी है, जिसे मैंने अपने गुरुजनों से सुना है। यदि मैं किसी की रुचि तथा अरुचि से प्रभावित होता, तो सम्भवतः मैं इस सरल सत्य को न लिख पाता।**

### तात्पर्य

मनुष्यों के लिए सबसे सरल बात है पूर्ववर्ती आचार्यों का अनुगमन करना। अपनी भौतिक इन्द्रियों के द्वारा कोई निर्णय कर पाना सरल काम नहीं है। श्री चैतन्य महाप्रभु के अनुसार पूर्ववर्ती आचार्यों के प्रति समर्पण के कारण जो अनुभूति जाग्रत होती है, वही भक्ति का मार्ग है। किन्तु ग्रंथकार का कहना है कि वे राग-द्वेष से प्रभावित लोगों के मतों पर विचार नहीं कर सकते, क्योंकि तब निष्पक्ष भाव से लेखन-कार्य नहीं किया जा सकता। दूसरे शब्दों में, ग्रन्थकार का कहना है कि उन्होंने *चैतन्य-चरितामृत* में अपने खुद के विचार प्रकट नहीं किये हैं। उन्होंने अपने गुरुजनों से जो सीखा है उसे ही सहज भाव में लिपिबद्ध किया है। यदि वे किसी की पसन्द-नापसन्द के फेर में पड़ते, तो इतने सरल ढंग से ऐसे उत्कृष्ट विषय पर ग्रंथ नहीं लिख सकते थे। वास्तविक तथ्य को शुद्ध भक्त ही समझ पाते हैं। जब इन तथ्यों को लिपिबद्ध किया जाता है, तो वे भक्तों के अनुकूल हो जाते हैं, किन्तु अभक्त लोग उन्हें नहीं समझ पाते। साक्षात्कार का विषय ऐसा ही होता है। दुनियावी पाण्डित्य तथा इससे उत्पन्न राग और विराग सहज भगवत्-प्रेम को जाग्रत नहीं कर सकता। दुनियावी विद्वान ऐसे प्रेम का वर्णन नहीं कर सकते।

যেবা নাহি বুঝে কেহ, শুনিতে শুনিতে সেহ,
কি অদ্ভুত চৈতন্য-চরিত ।

কৃষ্ণে উপজিবে প্রীতি, জানিবে রসের রীতি,
শুনিলেই বড় হয় হিত ॥৮৭॥

**ग्रेबा नाहि बुझे केह, शुनिते शुनिते सेह,**
**कि अद्भुत चैतन्य-चरित ।**
**कृष्णे उपजिबे प्रीति, जानिबे रसेर रीति,**
**शुनिलेइ बड़ हय हित ॥८७॥**

**ग्रेबा**—जो कोई; **नाहि**—नहीं; **बुझे**—समझता; **केह**—कोई; **शुनिते शुनिते**—सुन सुनकर; **सेह**—वह; **कि**—क्या; **अद्भुत**—अद्भुत; **चैतन्य-चरित**—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ; **कृष्णे**—कृष्ण में; **उपजिबे**—विकसित होगा; **प्रीति**—प्रेम; **जानिबे**—वह समझ जायेगा; **रसेर**—दिव्य रस की; **रीति**—रीति; **शुनिलेइ**—मात्र सुनने से; **बड़**—बड़ा; **हय**—है; **हित**—लाभ।

### अनुवाद

**यदि प्रारम्भ में किसी की समझ में नहीं आता, किन्तु वह बार-बार इसे सुनता रहता है, तो उसमें महाप्रभु की लीलाओं के अद्भुत प्रभाव से कृष्ण-प्रेम उत्पन्न हो जायेगा। धीरे-धीरे वह कृष्ण तथा गोपियों एवं वृन्दावन के अन्य पार्षदों की माधुर्य लीलाओं को समझने लगेगा। पूरा लाभ उठाने के लिए हर एक को परामर्श दिया जाता है कि वह बार-बार श्रवण करता रहे।**

ভাগবত—শ্লোক-ময়, টীকা তার সংস্কৃত হয়,
তবু কৈছে বুঝে ত্রি-ভুবন ।
ইহাঁ শ্লোক দুই চারি, তার ব্যাখ্যা ভাষা করি,
কেনে না বুঝিবে সর্ব-জন ॥৮৮॥

**भागवत—श्लोक-मय, टीका तार संस्कृत हय,**
**तबु कैछे बुझे त्रि-भुवन ।**
**इहाँ श्लोक दुइ चारि, तार व्याख्या भाषा करि,**
**केने ना बुझिबे सर्व-जन ॥८८॥**

**भागवत**—श्रीमद्भागवत्; **श्लोक-मय**—संस्कृत श्लोकों से पूर्ण; **टीका**—टीकाएँ; **तार**—उसकी; **संस्कृत**—संस्कृत भाषा; **हय**—हैं; **तबु**—तथापि; **कैछे**—कैसे; **बुझे**—समझता है; **त्रि-भुवन**—सारा संसार; **इहाँ**—इसमें; **श्लोक**—श्लोक; **दुइ चारि**—दो बार, कुछ ही;

**तार**—उनकी; **व्याख्या**—व्याख्या; **भाषा**—सरल भाषा में; **करि**—मैं करता हूँ; **केने**—क्यों; **ना**—नहीं; **बुझिबे**—समझेंगे; **सर्व-जन**—सभी लोग।

### अनुवाद

**जो आलोचक यह कहते हैं कि श्री चैतन्य-चरितामृत संस्कृत श्लोकों से भरा है, उसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि श्रीमद्भागवत भी संस्कृत श्लोकों से भरा है और उसके भाष्य भी। तथापि श्रीमद्भागवत को हर कोई समझ लेता है—वे उन्नत भक्तगण भी, जो संस्कृत भाष्य पढ़ते हैं। तो फिर लोग चैतन्य-चरितामृत को क्यों नहीं समझ पायेंगे? इसमें कुछ ही संस्कृत श्लोक हैं और उनकी व्याख्या बांगला भाषा में दी हुई है। तो फिर इसे समझने में क्या कठिनाई है?**

শেষ-লীলার সূত্র-গণ, কৈলুঁ কিছু বিবরণ,
ইহাঁ বিস্তারিতে চিত্ত হয় ।
থাকে যদি আয়ুঃ-শেষ, বিস্তারিব লীলা-শেষ,
যদি মহাপ্রভুর কৃপা হয় ॥৮৯॥

**शेष-लीलार सूत्र-गण, कैलुँ किछु विवरण,**
**इहाँ विस्तारिते चित्त हय ।**
**थाके यदि आयुः-शेष, विस्तारिब लीला-शेष,**
**यदि महाप्रभुर कृपा हय ॥ ८९ ॥**

**शेष-लीलार**—अन्तिम लीलाओं की; **सूत्र-गण**—रूपरेखा का; **कैलुँ**—मैंने किया है; **किछु**—कुछ; **विवरण**—वर्णन; **इहाँ**—यहाँ; **विस्तारिते**—और विस्तार करने हेतु; **चित्त हय**—इच्छा है; **थाके**—रहती है; **यदि**—यदि; **आयुः-शेष**—जीवन का अन्त; **विस्तारिब**—मैं वर्णन करूँगा; **लीला**—लीलाएँ; **शेष**—अन्त में; **यदि**—यदि; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **कृपा**—कृपा; **हय**—हो।

### अनुवाद

**मैंने पहले ही श्री चैतन्य महाप्रभु की अन्तिम लीलाओं से सम्बन्धित सारे तथ्यों को सूत्र रूप में दे दिया है। मेरी इच्छा है कि मैं इनका विस्तृत वर्णन करूँ। यदि मैं अधिक काल तक जीवित रहा और श्री चैतन्य**

**महाप्रभु की कृपा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला, तो मैं पुनः इनका विस्तार से वर्णन करने का प्रयास करूँगा।**

আমি বৃদ্ধ জরাতুর, লিখিতে কাঁপয়ে কর,
মনে কিছু স্মরণ না হয় ।
না দেখিয়ে নয়নে, না শুনিয়ে শ্রবণে,
তবু লিখি'—এ বড় বিস্ময় ॥৯০॥

**आमि वृद्ध जरातुर, लिखिते काँपये कर,**
**मने किछु स्मरण ना हय ।**
**ना देखिये नयने, ना शुनिये श्रवणे,**
**तबु लिखि'—ए बड़ विस्मय ॥ ९० ॥**

**आमि**—मैं; **वृद्ध**—वृद्ध; **जरा-आतुर**—बुढ़ापे से परेशान; **लिखिते**—लिखते समय; **काँपये**—काँपता है; **कर**—हाथ; **मने**—मन में; **किछु**—कुछ; **स्मरण**—स्मरण; **ना हय**—नहीं रहता; **ना देखिये**—मैं देख नहीं सकता; **नयने**—आँखों से; **ना शुनिये**—मैं सुन नहीं सकता; **श्रवणे**—कानों से; **तबु**—तथापि; **लिखि'**—लिख रहा हूँ; **ए**—यह; **बड़ विस्मय**—बड़ा आश्चर्य है।

अनुवाद

**मैं अब अत्यन्त वृद्ध हो गया हूँ और अपनी अक्षमता से विचलित हूँ। लिखते समय मेरे हाथ काँपते हैं। न तो मुझे कुछ स्मरण रहता है, न मैं ठीक से देख या सुन सकता हूँ। फिर भी मैं लिखता हूँ; यह बहुत बड़ा आश्चर्य है।**

এই অন্ত্য-লীলা-সার, সূত্র-মধ্যে বিস্তার,
করি' কিছু করিলুঁ বর্ণন ।
ইহা-মধ্যে মরি যবে, বর্ণিতে না পারি তবে,
এই লীলা ভক্ত-গণ-ধন ॥৯১॥

**एइ अन्त्य-लीला-सार, सूत्र-मध्ये विस्तार,**
**करि' किछु करिलुँ वर्णन ।**
**इहा-मध्ये मरि यबे, वर्णिते ना पारि तबे,**
**एइ लीला भक्त-गण-धन ॥ ९१ ॥**

**एइ अन्त्य-लीला-सार**—अन्त्य लीला का सार; **सूत्र-मध्ये**—रूपरेखा के रूप में; **विस्तार**—विस्तार; **करि'**—करके; **किछु**—कुछ; **करिलुँ वर्णन**—वर्णन किया है; **इहा-मध्ये**—इसी बीच; **मरि**—मैं मर जाता हूँ; **य़बे**—जब; **वर्णिते**—वर्णन करने में; **ना पारि**—असमर्थ; **तबे**—तब; **एइ लीला**—ये लीलाएँ; **भक्त-गण-धन**—भक्तों की निधि।

### अनुवाद

**इस अध्याय में मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु की अन्तिम लीलाओं के सार का कुछ वर्णन किया है। यदि इसी बीच मैं मर जाऊँ और विस्तार से उनका वर्णन न कर पाऊँ, तो भक्तों को कम-से-कम यह दिव्य कोष तो मिल ही जायेगा।**

সঙ্ক্ষেপে এই সূত্র কৈল, যেই ইহাঁ না লিখিল,
আগে তাহা করিব বিস্তার ।
যদি তত দিন জিয়ে, মহাপ্রভুর কৃপা হয়ে,
ইচ্ছা ভরি' করিব বিচার ॥৯২॥

**सङ्क्षेपे एइ सूत्र कैल, य़ेइ इहाँ ना लिखिल,**
**आगे ताहा करिब विस्तार ।**
**य़दि तत दिन जिये, महाप्रभुर कृपा हये,**
**इच्छा भरि' करिब विचार ॥ ९२ ॥**

**सङ्क्षेपे**—संक्षेप में; **एइ सूत्र**—ये रूपरेखाएँ; **कैल**—मैंने बताई हैं; **य़ेइ**—जो कुछ; **इहाँ**—इसमें; **ना लिखिल**—मैं न लिख सका; **आगे**—भविष्य में; **ताहा**—वह; **करिब**—मैं करूँगा; **विस्तार**—विस्तार; **य़दि**—यदि; **तत**—इतने अधिक; **दिन**—दिन; **जिये**—मैं जीता हूँ; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **कृपा**—कृपा; **हये**—है; **इच्छा भरि'**—मन भरके; **करिब**—मैं करूँगा; **विचार**—विचार।

### अनुवाद

**मैंने इस अध्याय में संक्षेप में अन्त्य-लीला का वर्णन किया है। जो कुछ बच रहा है, उसका विस्तार से वर्णन भविष्य में करूँगा। यदि श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से मैं इतने दिनों तक जीवित रहा कि मैं अपनी इच्छाएँ पूरी कर पाऊँ, तो इन लीलाओं पर पूरी तरह विचार करूँगा।**

ছোট বড় ভক্ত-গণ, বন্দোঁ সবার শ্রী-চরণ,
সবে মোরে করহ সন্তোষ ।
স্বরূপ-গোসাঞির মত, রূপ-রঘুনাথ জানে যত,
তাই লিখি' নাহি মোর দোষ ॥৯৩॥

**छोट बड़ भक्त-गण, वन्दों सबार श्री-चरण,**
**सबे मोरे करह सन्तोष ।**
**स्वरूप-गोसाञिर मत, रूप-रघुनाथ जाने ग्रत,**
**ताइ लिखि' नाहि मोर दोष ॥ ९३॥**

**छोट**—छोटे; **बड़**—बड़े; **भक्त-गण**—भक्तों की; **वन्दों**—मैं वन्दना करता हूँ; **सबार**—उन सब; **श्री-चरण**—चरणकमल; **सबे**—आप सब; **मोरे**—मुझे; **करह**—कृपया करो; **सन्तोष**—सन्तोष; **स्वरूप-गोसाञिर मत**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी का मत; **रूप-रघुनाथ**—रूप तथा रघुनाथ; **जाने**—जानते हैं; **ग्रत**—सब; **ताइ**—वह; **लिखि'**—लिख रहा हूँ; **नाहि**—नहीं है; **मोर**—मेरा; **दोष**—दोष।

### अनुवाद

**मैं यहाँ छोटे-बड़े सभी भक्तों के चरणकमलों की वन्दना करता हूँ। मेरी उनसे प्रार्थना है कि मुझ से सन्तुष्ट हों। मैं निर्दोष हूँ, क्योंकि मैंने स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रूप और रघुनाथ दास गोस्वामियों से जैसा समझा है, वैसा ही लिख दिया है। मैंने उसमें अपनी ओर से न तो कुछ जोड़ा है, न कम किया है।**

### तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर के अनुसार भक्त तीन तरह के होते हैं— *भजनविज्ञ* (भक्ति में दक्ष), *भजनशील* (भक्ति में रत) तथा *कृष्णनामे-दीक्षित कृष्णनामकारी* (कीर्तन में रत दीक्षित भक्त)। *श्री चैतन्य-चरितामृत* के लेखक इन सारे भक्तों के कृपाकांक्षी हैं और उनसे प्रसन्न होने के लिए निवेदन करते हैं। वे कहते हैं, "नये भक्त मुझसे इसलिए रुष्ट न हों कि मैंने कोई त्रुटि की है, क्योंकि ये भक्त तर्क करने में अत्यन्त दक्ष होते हैं। यद्यपि इनमें उन्नत भक्ति का अधिक ज्ञान नहीं होता, फिर भी वे अपने आपको उन्नत मानते हैं, क्योंकि वे कुछ स्मार्त ब्राह्मणों का अनुकरण करते हैं। मैं अत्यन्त विनम्र होकर उनसे क्षमा-याचना करता हूँ। किन्तु मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि इसमें

मैं अपने मन से कुछ जोड़ना या घटाना नहीं चाहता। मैंने परम्परा से जो सुना है उसीको लिखा है, क्योंकि मैं स्वरूप दामोदर, रघुनाथ दास गोस्वामी तथा रूप गोस्वामी जैसे पूर्ववर्ती आचार्यों के चरणकमलों में समर्पित हूँ। मैंने वही लिखा है, जो मैंने उनसे सीखा है।"

শ্রী-চৈতন্য, নিত্যানন্দ, অদ্বৈতাদি ভক্ত-বৃন্দ,
শিরে ধরি সবার চরণ ।
স্বরূপ, রূপ, সনাতন, রঘুনাথের শ্রী-চরণ,
ধূলি করোঁ মস্তকে ভূষণ ॥৯৪॥

**श्री-चैतन्य, नित्यानन्द, अद्वैतादि भक्त-वृन्द,**
**शिरे धरि सबार चरण ।**
**स्वरूप, रूप, सनातन, रघुनाथेर श्री-चरण,**
**धूलि करों मस्तके भूषण ॥ ९४॥**

**श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **अद्वैत-आदि भक्त-वृन्द**—अद्वैत आचार्य और अन्य सभी भक्त; **शिरे**—अपने सिर पर; **धरि**—रखकर; **सबार**—सबके; **चरण**—चरणकमल; **स्वरूप**—श्रील स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **रूप**—श्रील रूप गोस्वामी; **सनातन**—श्रील सनातन गोस्वामी; **रघुनाथेर**—श्रील रघुनाथ गोस्वामी; **श्री-चरण**—चरणकमल; **धूलि**—धूलि; **करों**—मैं करता हूँ; **मस्तके**—अपने सिर पर; **भूषण**—तिलक।

अनुवाद

**परम्परा पद्धति के अनुसार मैं श्री चैतन्य महाप्रभु, नित्यानन्द प्रभु, अद्वैत प्रभु तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के समस्त पार्षदों यथा स्वरूप दामोदर, रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी और रघुनाथ दास गोस्वामी के चरणकमलों की धूलि लेना चाहता हूँ। मैं उनके चरणकमलों की धूलि अपने मस्तक पर धारण करना चाहता हूँ। इस प्रकार मैं उनकी कृपा का आशीर्वाद चाहता हूँ।**

পাঞা যাঁর আজ্ঞা-ধন, ব্রজের বৈষ্ণব-গণ,
বন্দোঁ তাঁর মুখ্য হরিদাস ।

চৈতন্য-বিলাস-সিন্ধু-কল্লোলের এক বিন্দু,
তার কণা কহে কৃষ্ণদাস ॥৯৫॥

**पाञा ग्राँर आज्ञा-धन, व्रजेर वैष्णव-गण,**
**वन्दों ताँर मुख्य हरिदास ।**
**चैतन्य-विलास-सिन्धु-कल्लोलेर एक बिन्दु,**
**तार कणा कहे कृष्णदास ॥ ९५ ॥**

**पाञा**—पकर; **ग्राँर**—जिनकी; **आज्ञा-धन**—आज्ञा; **व्रजेर**—वृन्दावन के; **वैष्णव-गण**—सभी वैष्णव; **वन्दों**—मैं पूजा करता हूँ; **ताँर**—उनमें; **मुख्य**—मुख्य; **हरिदास**—हरिदास; **चैतन्य-विलास-सिन्धु**—चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं के सागर; **कल्लोलेर एक बिन्दु**—एक लहर की एक बूँद; **तार**—उसकी; **कणा**—एक कण मात्र; **कहे**—वर्णन करता है; **कृष्णदास**—कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

### अनुवाद

**उपर्युक्त महापुरुषों एवं वृन्दावन के वैष्णवों, विशेषकर गोविन्दजी के पुजारी हरिदास की आज्ञा से मैंने ( कृष्णदास कविराज गोस्वामी ने ) श्री चैतन्य महाप्रभु के लीला-सिन्धु की एक लहर के एक बिन्दु के एक कण का वर्णन करने का प्रयास किया है।**

*इस तरह श्रीचैतन्य-चरितामृत मध्यलीला के "श्री चैतन्य महाप्रभु के भावोन्माद की अभिव्यक्ति" शीर्षक द्वितीय अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।*